भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 11 | मई 2010 | अंक 5

सुमित्रानंदन पंत

सुमित्रानंदन पंत (**20 मई** 1900-29 दिसम्बर 1977) को जन्म के कुछ दिनों बाद ही माताजी से चिर विछोह हो गया था। शैशव में ही उन्हें किसी सन्त का सान्निध्य मिला और उनसे प्रभावित होकर वह अचला धारण करने लगे। घर वाले चौकन्ने हो गए कि कहीं गुसाईं दत्त धीरे-धीरे असांसारिक होकर साधु न बन जाएँ। माताविहीन बालक प्रकृति के सौन्दर्य से मन बहलाने लगा और मानव प्रकृति से विरक्त होता गया। उन्होंने सिर के घने घुँघराले बाल बढ़ाए और सामान्य परिधान न पहनकर साधुओं की तरह घुटनों तक का उत्तरीय धारण किया। कुछ समय बाद वह ''तजकर तरल तरंगों को, इन्द्रधनुष के रंगों को॥ बाले तेरे बाल जाल में, कैसे उलझाऊँ लोचन॥'' जैसी प्रकृति की रचनाएँ लिखने के लिए अपने जीवन को गढ़ने लगे। सात वर्ष की अवस्था में उन्होंने अल्मोड़ा शहर के गिरजाघर को देखकर एक कविता लिखी। कौसानी की सुरम्य उपत्यकाओं में रहने वाले गुसाईं दत्त ने बाद की पढ़ाई क्वींस कॉलेज, वाराणसी में की, इसके बाद वे आकाशवाणी के परामर्शक के रूप में नियुक्त हुए।

पंतजी में हिन्दी के प्रति विशेष अनुराग था। उन्हें छायावादी कवियों का विशेष सान्निध्य मिला। उन्होंने कोमलकांत पदावली में रचनाएँ लिखीं। उनकी एक बाल रचना 'मैंने पैसे बोये थे' बहुत लोकप्रिय हुई। वीणा (1927), पल्लव (1928) गुंजन, ग्रंथि, स्वर्णधूलि, स्वर्णकिरण, युगपथ, उत्तरा, अतिमा, युगांत, युगवाणी और ग्राम्य आदि में उनका प्रकृति प्रेम सात्विकता के मानक पर अपनी पराकाष्ठा पर है। उनकी कृति चिदम्बरा को ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया। इसकी प्राप्त धनराशि उन्होंने एक संस्था को दे दी। एक साहित्यकार के रूप में उनकी प्रतिष्ठा के अतिरिक्त वे सहृदय मानव थे।

ग्रहण-ग्रस्त है हमारी मेधा

'मेधां धाता ददातु मे' जैसी प्रार्थना करने वाले देश की मेधा को ग्रहण लग गया है, सुनकर विश्वास नहीं होता।

अब तक तो सुनते आये हैं कि सरस्वती नदी के किनारों पर विकसित हमारी संस्कृति का सारस्वत-यज्ञ सदानीरा के अविरल प्रवाह तक निरन्तर चलता रहा है। कालान्तर में किसी प्रचण्ड प्राकृतिक-विक्षोभ के कारण सरस्वती की धारा राजस्थान के मरु-कांतार में कहीं विलुप्त हो गयी।

सरस्वती का यह करुण-अवसान हमारी चेतना को झकझोर गया। किन्तु उसकी भाव-प्रतिमा संजीवित रही हमारी विद्या, कला, शिल्प, ज्ञान, विज्ञान में, सांस्कृतिक उपलब्धियों में। मध्यकालीन हमले हमारी इस धरोहर को ध्वस्त करने का प्रयत्न करते रहे। तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिला आदि के विश्व-विश्रुत आचार्यकुल खण्डहर बन गये, अग्निकाण्ड में भस्म हो गये सैकड़ों विशाल ग्रन्थागार, राख हो गयी सदियों से सहेज कर रखी गयी ज्ञान-सम्पदा। इस तरह बहुत-कुछ खोकर, लुट-पिटकर भी हमारी अंतश्चेतना में बहती रही सरस्वती। मध्यकाल का समग्र भक्ति-साहित्य उसी सारस्वत-संस्कृति के अविरल प्रवाह की अभिव्यक्ति है।

ब्रिटिश-हुकूमत की गुलामी के बीच शिक्षा के नये मानकों से हमारा परिचय हुआ। क्रमशः हमारी चेतना का पुनरोन्मेष होने लगा। चेतना का यही उन्मेष राष्ट्रीय-जागरण का कारक बना और लम्बे संघर्ष के बाद हमने आज़ादी हासिल कर ली। आज़ादी के बाद समग्र-राष्ट्रीय-विकास के रास्ते की तमाम विघ्न-बाधाओं को पार करते हुए आज हम चतुर्मुखी विकास के मार्ग पर अग्रसर हैं। विकास की इस प्रक्रिया को गतिशील करने में हमारी शिक्षा-व्यवस्था ने भी पूरा योग दिया है।

'मिलेनियम-वर्ष' की सन्धि में वैश्वक-अवधारणाओं और सम्बन्धों के विस्तार के साथ हमने विश्व-बाज़ार में प्रवेश किया और हमारे देखते-देखते बाज़ार ने अपनी हज़ारों भुजाओं से हमारी शक्तियों का अधिग्रहण आरम्भ कर दिया। एक दशक के अन्दर ही हमारी युवा पीढ़ी, शिक्षा-तंत्र, मीडिया-तंत्र, राजनीति, प्रशासन-तंत्र आदि ने इस बाज़ार के समक्ष समर्पण कर दिया है। वस्तुतः बाज़ार का यह हमला अपनी चमक-दमक का प्रलोभन लिये, भोगवाद का आधार प्रस्तुत करते हुए सबसे पहले देश की मेधा, प्रतिभा यानी 'सॉफ्ट-पावर' का अधिग्रहण करता है। इसीलिए वर्तमान भारतीय बाज़ार में शिक्षा-व्यवसाय खूब फल-फूल रहा है। बाज़ार की ज़रूरत को पूरा करने के लिए कटिबद्ध है हमारी पूरी शिक्षा-प्रणाली। इसीलिए तो 'ए-जी' - 'के-जी' से लगायत तथाकथित 'हायर-एजुकेशन' तक परीक्षाओं के अंकगणित और 'मेरिट्स' की कवायद करते-करते खो जाता है बच्चों का बचपन, अवचेतन में ही घुट जाता है कैशोर्य का नवोन्मेष और पतझड़ की तरह बिखर जाता है यौवन की ऊर्जा का शृंगार। इस बाज़ार के भोगपरक-प्रलोभन की कीमत पर अपनी आत्मा का वास्तविक वैभव खोकर, अपनी सर्जन-क्षमता खोकर हम कौन-सी ऊँचाइयाँ तय कर रहे हैं, कौन-सी उपलब्धि हासिल कर रहे हैं, यह तो हम खुद भी नहीं जानते।

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

गम्भीर अध्ययन-मनन और सांस्कृतिक-उपादानों के साहचर्य से व्यक्तित्व के विकास एवं नित्य-नूतन-सर्जना के भारतीय-मानकों की उपेक्षा करके हम और हमारे बच्चे आज बाज़ार में खड़े हैं—आत्म-हीन/स्वर्ण-हस्त। हमारी चेतना के आकाश पर भोगवाद के 'ग्लैमरस'-ग्रहण की मनहूस छाया है और इस ग्रहण से ग्रस्त है हमारी मेधा...!

फिर भी अभी बहुत कुछ शेष है। लुप्त होकर भी हमारी चेतना में साँस ले रही है हमारी सरस्वती। अपनी दृढ़ इच्छा-शक्ति द्वारा हम बाज़ार को अपनी ही शर्तों पर नियन्त्रित कर सकते हैं। प्रतिदिन होने वाले परिवर्तनों के साथ कदमताल करते हुए भी हम अपनी दिशा स्वयं निर्धारित कर सकते हैं, जरूरत है आत्म-बोध से उपजे कर्म-संकल्प की। सुनो, इस तुमुल-कोलाहल में भी कोई पुकार-पुकार कर कह रहा है—

''उत्तिष्ठत् जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।''

सर्वेक्षण

● **गूगल-हिन्दी :** इंटरनेट के दौर में विश्वव्यापी गूगल पर हिन्दी के प्रवेश की खबर से जहाँ खुशी मिली, वहीं अखबार में यह पढ़कर स्तब्ध रह जाना पड़ा कि 'गूगल पर हिन्दी भाषा में सर्च की शुरुआत प्रत्येक वर्ण से जुड़े अपशब्दों के साथ होती है।' पिछले दिनों चीन ने अपने देश में गूगल को प्रतिबन्धित करते हुए स्पष्ट शब्दों में 'सांस्कृतिक-आघात और सुरक्षा के लिए खतरा' जैसे आरोप लगाये थे। अपने यहाँ तो गूगल पर राष्ट्रभाषा का अक्षरारंभ ही कुसंस्कारित है और आगे क्या होगा यह तो दिल्ली में विराजमान महाबली सरकार ही जाने!

● ● **हाय-तौबा :** एक रंगीन-मिज़ाज, विलासप्रिय बुजुर्ग चित्रकार ने अपने मुल्क से पलायन के अरसे बाद दूसरे देश की नागरिकता क्या ले ली कि दिल्ली-मुम्बई के कथित बुद्धिजीवियों, संस्कृतिकर्मियों में हाय-तौबा मच गयी। साम्प्रदायिक ताकतों के नाम पर धर्मनिरपेक्ष-मीडिया फातिहा पढ़ता रहा। इन सबसे निरपेक्ष एक मामूली आदमी के मन में सवाल उठता रहा कि हमारे संविधान में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर देश की जातीय संस्कृति के अश्लील-अपमान की कौन-सी सज़ा मुकर्रर की गयी है?

● ● ● **पुस्तक-पर्व :** आश्चर्य होता है कि हमारे इतने बड़े देश में विश्व पुस्तक दिवस (23 अप्रैल) के दिन कोई हलचल न हुई। पुस्तकालयों-वाचनालयों, लेखकों-पाठकों, प्रकाशकों-वितरकों, छात्रों-अध्यापकों, मीडिया-पत्रकारों यानी किताबों से जुड़े हुए लोगों को इस पुस्तक-पर्व से कोई सरोकार न था। हमारी इस पुस्तकीय-बेरुखी के समान्तर दूसरी ओर 'यूनाइटेड किंगडम' और 'आयरलैण्ड' के पुस्तक-प्रेमियों ने 4 मार्च 2010 को ही एक भव्य आयोजन के साथ यह त्योहार मनाया जबकि दुनिया के दूसरे देशों के लिए यह तिथि 23 अप्रैल ही रखी गयी।

वस्तुत: यह दिवस 1923 के स्पेन के पुस्तक-विक्रेताओं ने अपने देश के प्रतिष्ठित लेखक 'मिगल-दे-करवेंट्स' (Migul-de-carvantes) के सम्मान में लेखक की निर्वाण-तिथि को यादगार बनाकर 'विश्व-पुस्तक-दिवस' की शुरुआत की। बाद में इसी तिथि के साथ 'विलियम शेक्सपियर' का नाम भी जुड़ गया जो कैलेण्डर-भेद के कारण बाद में कुछ संशोधित होकर भी ज्यों-का-त्यों स्वीकृत कर लिया गया। इस वर्ष 2010 में 'पुस्तक-दिवस' के आयोजन के लिए 'रेनेसाँ-लर्निंग' की ओर से 'रीड-टू-ए-मिलियन-किड्स' कार्यक्रम प्रायोजित किया गया है जिसमें विभिन्न श्रव्य-दृश्य कार्यक्रमों के ज़रिये बच्चों में किताबों के प्रति अभिरुचि जागृत करने की भावात्मक प्रक्रिया अपनायी गयी है।

यूरोप में मध्यकाल से ही प्रेमियों द्वारा अपनी प्रेमिकाओं को गुलाब के फूल को उपहार में देने की परम्परा रही है। सन् 1925 से प्रेमिकाओं ने उपहार में मिले 'गुलाब के फूलों' के बदले अपने प्रेमियों को किताबों के तोहफे देने शुरू कर दिये। उस दौर में केवल 'केटेलोनिया' में ही 40 लाख गुलाब के फूलों के बदले 4 लाख पुस्तकों की खरीद की गयी।

किताबों के इसी गुलाबी-तोहफे के साथ विश्व-पुस्तक दिवस पर हमारी भी कामना है कि हमारे यहाँ जिज्ञासु-वृत्ति के बच्चों से बुजुर्ग तक इस पुस्तक-पर्व में हिस्सेदारी करें और ज्ञान की परम्परा के पोषण एवं संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध हों।

सारस्वत-यज्ञ की अग्नि-ज्वाला
पावन करे, निखिल-जगत के घर-आँगन,
मेधा-प्रज्ञा-स्मृति संवलित ज्ञान-
दीप्ति से, हो मनुज का दिव्य-रूपान्तरण!

—परागकुमार मोदी

हिन्दी को नष्ट करने का उपक्रम है हिंग्लिश

—बदरीनाथ कपूर

अंग्रेज कभी अपनी भाषा में कोई हास्यास्पद मिलावट नहीं करते। वे अंग्रेजी की गरिमा और मौलिकता के साथ कभी कोई समझौता बर्दाश्त नहीं करते। अपनी भाषा के मान-सम्मान के प्रति सतत सावधान रहते हैं। अपने ही यहाँ बांग्ला से लेकर तमिल-तेलुगु तक, आप कहीं झाँक लें, कोई अपनी भाषा के मौलिक रूप-स्वरूप के प्रति इतना लापरवाह नहीं जितना हाल के वर्षों में हिन्दीवालों को देखा जा रहा है। कुछ लोग हिन्दी को 'हिंग्लिश' बनाने पर तुल गए हैं। यह वस्तुत: हिन्दी को नष्ट करने का ही उपाय है। यह दर्द है प्रख्यात भाषाशास्त्री डॉ० बदरीनाथ कपूर का। वे कहते हैं कि जिस वस्तु या सन्दर्भ के लिए हिन्दी में शब्द न हों, यथा कम्प्यूटर, ट्रेन, स्टेशन आदि, उनके लिए अंग्रेजी शब्द-रूप के प्रयोग की वजह तो समझ में आती है किन्तु जिनके लिए हिन्दी के पास सुन्दर-सशक्त शब्द उपलब्ध हों, उनके लिए भी जबरन अंग्रेजी का इस्तेमाल सर्वथा हास्यास्पद है। यथा जब 'पुष्टि' शब्द है ही तो इसकी जगह हम हिन्दी के वाक्य में यदि 'कंफर्म' लिखते हैं तो जाने-अनजाने हिन्दी की क्षमता को लांछित कर रहे हैं और अपनी भाषा को बिगाड़ने का काम कर रहे हैं। श्री कपूर के अब तक करीब चालीस ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें व्याकरण, लिपि, वर्तनी, भाषा-अभ्यास, शब्दकोश, परिभाषा कोश और मुहावरा-लोकोक्ति कोश आदि सरीखे भाषा-व्यवहार के बाईस वृहदाकार ग्रन्थ हैं जबकि शेष किताबें अनुवाद, जीवनी व अन्य सन्दर्भों की हैं।

—दैनिक जागरण से साभार

आर्य बनाम हिन्दू—मूल भारतीय अथवा आक्रान्ता

—प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र

भारत की जानकारी जब यूनानियों (यवनों) शकों, कुषाणों, हूणों को हुई तब समूचे भारत में कौन लोग रहते थे? यह प्रश्न इतिहास के लिये भले ही अनुत्तरणीय हो प्रमाणाभाव में, परन्तु पुराणों में इसका सटीक समाधान मिलता है—

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चापि दक्षिणम्।
वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः॥

अर्थात् जो भूखण्ड (देश) समुद्र के उत्तर तथा हिमालय पर्वत के दक्षिण में स्थित है, उसे ही भारत कहते हैं जिसमें भारती-प्रजा निवास करती है। यहाँ 'भारती-सन्तति' का सामान्य अर्थ है भारतीय-जन। विष्णु तथा श्रीमद्भागवत—दोनों ही पुराणों में भारतविषयक प्रभूत सूचना मिलती है। ये प्रमाण किसी भी तथाकथित ऐतिहासिक साक्ष्य से कहीं अधिक प्राचीन एवं विश्वसनीय हैं।

तो फिर भारतीय '**आर्य अथवा हिन्दू**' कब और कैसे बन गये? आर्यों का जातिविशेष (आर्यजाति) होना, मध्येशियावासी होना, यवनों-शकों-हूणों के ही समान भारत पर आक्रमणकारी होना, भारत के मूल निवासी (दक्षिणभारतीय?) जनों का विजेता होना और अन्ततः आर्यों का ही सम्प्रति हिन्दू होना—यह सब क्या है?

इन सारे प्रश्नों का एक ही ठोस उत्तर है—यह सब भारत विरोधी कुछ अंग्रेज विद्वानों की निर्मूल अवधारणामात्र है। सत्य तो यह है कि न आर्य नाम की कभी कोई जाति रही, न उसने कभी भारत पर आक्रमण किया और न ही उसने अनार्य नामक किसी मूल भारतीय जाति का उच्छेद किया। ए०एल० बाशम सरीखे पाश्चात्त्य मनीषी भी इस बौद्धिक षडयंत्र का विरोध करते हैं। प्रसिद्ध ऐतिह्यविद् डॉ० राजबली पाण्डेय ने भी इस अवधारणा को 'सफेदझूठ' ही माना है। मैं दोनों विद्वानों का मन्तव्य यहाँ उद्धृत करता हूँ—

बुलेटिन ऑफ दि इन्स्टीट्यूट ऑफ हिस्टारिकल रिसर्च, मद्रास भाग-दो, 1963 ई० में प्रकाशित अपने शोधलेख में डॉ० बाशम ने स्पष्टतः कहा है कि 'न तो कोई द्रविड जाति है और न ही आर्य!'

डॉ० राजबली पाण्डेय ने भी अपने ग्रन्थ इण्डियन पेलियोग्राफी के पृ० 34 पर सिन्धु-सभ्यता को पूर्णतः भारतीय-सभ्यता ही माना है।

वस्तुतः आर्य शब्द किसी जाति के अर्थ में कभी प्रयुक्त ही नहीं रहा। आचार्य भरत के नाट्यशास्त्र (ई०पू० चौथी शती) में 'आर्य' तथा आर्या शब्द श्रेष्ठतासूचक सम्बोधनों के रूप में प्रयुक्त है। पत्नी पति को **आर्यपुत्र** कहती है, अनुज अग्रज को **आर्य** कहता है, तपस्विनियों को **आर्या** कहा जाता है। आर्या शब्द ही आर्यिका > अज्जुका > आजी क्रम से अवधी-भोजपुरी तक उतर आया है। काशी-कोसल में दादी (पितामही) को **आजी** अथवा **अइया** कहा जाता है।

महाकवि कालिदास (ई०पू० दूसरी शती) भी आर्य शब्द को विशेषण के ही रूप में प्रयुक्त करते हैं—**यदार्यमस्यामभिलाषि में मनः।** यहाँ कवि 'आर्य-मन' की बात करता है जो पवित्र मन का पर्याय है। शाकुन्तल के पंचमांक में भी अपमानित शकुन्तला दुष्यन्त को फटकारती है—**अनार्य!** आत्मनो हृदयानुमानेन पश्यसि? यहाँ भी अनार्य शब्द का प्रयोग किसी जाति के अर्थ में न होकर बेईमान (अनार्जवशील) के ही अर्थ में है। बौद्धों के '**चत्वारि आर्यसत्यानि**' में भी आर्य शब्द उत्तमतासूचक विशेषण-मात्र है।

तब फिर विशेषण 'आर्य' संज्ञा (आर्यजाति) क्यों और कैसे बन गया? अंग्रेजों द्वारा सिरजा गया वह भ्रम आज भी, न केवल भारतीयों अपितु षड्यंत्ररसिक समूचे विश्व को उद्भ्रान्त कर रहा है? कुछ वर्ष पूर्व बिहार के एक बाहुबली सांसद ने तो संसद में कुछेक सांसदों को चुनौती देते हुए कहा था—''आप किस मुँह से मुसलमानों को आक्रमणकारी कहते हैं? आप भी तो इस देश में आक्रमण करके ही काबिज हुए हैं।''

वस्तुतः इस षड्यंत्र की एक प्रामाणिक पृष्ठभूमि है, उसे प्रस्तुत कर रहा हूँ। बिहार-बंगाल में अंग्रेजी-राज स्थिर हो जाने पर दो प्रारम्भिक गवर्नरजनरल—वारेन हेस्टिंग्ज तथा कार्नवालिस ने संस्कृत को राजभाषा-पद पर आसीन किया। परन्तु 1835 में लार्ड मैकाले ने अनुभव किया कि शासन के सहयोग से यदि भूली-बिसरी सामान्यजनता से कटी संस्कृत भाषा यदि पुनर्जीवित हो उठी तो, इस राष्ट्र पर अंग्रेजों का राज करना दूभर हो जायेगा। क्योंकि संस्कृत में तो पदे-पदे पराधीनता का तिरस्कार तथा स्वातंत्र्य का समर्थन है। दूरदर्शी मैकाले ने प्रयत्न करके संस्कृत के स्थान पर अंग्रेजी को राजभाषा बनवा दिया। मैकाले के संकेत पर ही कुछ देशी-विदेशी विद्वानों ने भारतीय संस्कृति, धर्म, परम्परा आदि का भी अवमूल्यन करना प्रारम्भ किया। वेबर, विण्डिश, ए० स्टीन, राजा राममोहन रॉय तथा (प्रारम्भिक चरण में) फ्रेडरिक मैक्समूलर इसी मानसिकता के थे।

लार्ड मैकाले के ही प्रभाव में फ्रेडरिक मैक्समूलर ने वेदों के रचनाकाल की उद्घोषणा तक कर डाली—ई०पू० 1200 वर्ष। मैक्समूलर की उद्घोषणा से ही विद्वज्जगत् में भूचाल सा आ गया। विशेषतः वे विद्वान् जो इंग्लैण्ड के नहीं थे, उनकी दृष्टि भारत के प्रति प्रशस्त थी। वे भारतीय धर्म, संस्कृति एवं भाषा की प्राचीनता के प्रबल पक्षधर थे। वे किसी राजनयिक प्रभाव में भी नहीं थे। अतः विश्व के प्राचीनतम वाङ्मय वेद की यह अवमानना (कि उनकी रचना ईसा से मात्र 1200 वर्ष पूर्व हुई) उन्हें बेहद अखरी। ब्लूमफील्ड आदि ने इसका विरोध भी किया।

इसी बीच चेकोस्लावाकिया के प्राग विश्वविद्यालय के विद्वान् प्रो० ह्राज्नी ने बोगाज़कोई (तुर्किस्तान) के दो अत्यन्त प्राचीन टीलों की खुदाई कराई जिसमें बहुमूल्य पुरा साक्ष्य मिले। इस क्षेत्र में ई०पू० तीसरी सहस्राब्दी में हित्ती एवं मितानी संस्कृतियाँ विद्यमान थीं जिनमें निरन्तर शक्तिपरीक्षण होता रहता था। एक अन्तिम निर्णायक युद्ध में दोनों राजाओं ने परस्पर सन्धि कर ली। हित्ती-नरेश ने अपनी कन्या मितानी-नरेश सुब्बिलुलिउमा को ब्याह दी तथा देवताओं को साक्षी मान कर एक सन्धिपत्र पर दोनों ने हस्ताक्षर किये कि भविष्य में वे मित्रवत् रहेंगे।

पत्थर की शिला पर उत्कीर्ण यह सन्धिपत्र भी प्रो० ह्राज्नी को मिला। आश्चर्य का विषय जो यह था कि साक्षी के रूप में उद्धृत चारों देवता इन्द्र, वरुण, मित्र तथा नासत्य—वैदिक देवता थे।

यह उत्खनन 1895 में सम्पन्न हुआ। 1905 ई० में प्रो० ह्राज्नी ने जब उपलब्ध साक्ष्यों की विस्तृत, प्रामाणिक रिपोर्ट प्रकाशित की तो सारा विश्व विस्मित हो उठा। प्रो० ह्राज्नी ने अकाट्य प्रमाणों से यह सिद्ध किया कि ई०पू० 2500 वर्ष पूर्व समूचा मध्येशिया-क्षेत्र वैदिक धर्म एवं संस्कृति के प्रभाव में था। इन्द्र-वरुण आदि देवता इस समूचे क्षेत्र में तथा हित्ती-मितानी संस्कृतियों में न केवल लोकप्रिय थे, अपितु पूजा-अर्चना के विषय भी थे। ऐसी स्थिति में, वेदों तथा वैदिक-संस्कृति को (मैक्समूलर द्वारा) मात्र ईसा पूर्व बारहवीं शती में स्थित बताना सर्वथा उपहासास्पद है। प्रो० ह्राज्नी की इन स्थापनाओं का ही यह परिणाम हुआ कि प्रो० मैक्समूलर ने अन्ततः फ्रांस की एक सभा में क्षमायाचना-पूर्वक वेदतिथि-विषयक अपना मन्तव्य वापस ले लिया।

परन्तु भारतीयवर्चस्व-विरोधी विद्वानों को तभी से एक मसाला मिल गया यह लिखने एवं प्रचारित करने का कि आर्य मध्येशिया में रहने वाली कोई जाति थी जिसने भारत पर आक्रमण कर यहाँ के मूल निवासी अनार्यों (द्रविड़ों?) को दक्षिण की ओर खदेड़ दिया। किसी सिरफिरे ने सिन्धुघाटी-संस्कृति को अनार्य अथवा द्रविड़-संस्कृति बताया तो किसी ने शिव को अनार्य-देवता तथा विष्णु को आर्य-देवता घोषित किया। अज्ञानग्रस्त भारत विरोधी विद्वानों की यह षड्यंत्रात्मक क्रीडा तब से अब तक यथावत् चली आ रही है। अब उसके उत्तराधिकारी बन गये हैं वे वामपंथी इतिहासकार तथा लेखक, जो भारत

की माटी में पैदा होकर भी उसे निरन्तर कोस रहे हैं। ये सभी बिकी मानसिकता के दयनीय प्राणी हैं।

सच केवल इतना ही है कि वैदिक अथवा भारतीय-संस्कृति ही विश्वसंस्कृति है—सा नो प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववादा। क्योंकि यह संस्कृति देश, काल एवं व्यक्ति की सीमा से सर्वथा मुक्त रही है। भारत से ही यह संस्कृति मिस्र, यूरोप, मध्येशिया तथा (ईसवी शती के बाद) बृहत्तर भारत के भूखण्डों में व्याप्त एवं प्रतिष्ठित हुई। सबके साधक प्रमाण आज भी उपलब्ध हैं।

सोचने की बात है कि यदि वैदिक संस्कृति तथा वेदों का सम्बन्ध मात्र मध्येशिया से होता तो वहाँ की नदियों, पर्वतों, वेश-भूषा, अन्न-पानी का कुछ तो उल्लेख वेदों में होता। परन्तु वेदों में तो मात्र गंगा यमुना सरस्वती परुष्णी सिन्धु आदि का उल्लेख है, हिमालय तथा उसके शिखरों का वर्णन है, भारतीय अन्न-पेय (ब्रीहि-सोम) तथा पशु-पक्षियों का विवरण है। अत: सिद्ध है कि भारतीय सदा-सदा से ही भारत के ही मूल निवासी रहे हैं। शक, हूण, खस, कुषाण आदि जो भी जातियाँ भारत में आईं, वे भी भारतीयता के ही रंग में रंग गईं **यहाँ के धर्म एवं संस्कार को अपना कर।** मात्र मुसलमान एवं ईसाई ही इसके अपवाद हैं। वे भी भारत में बसे, भारतीय बने—परन्तु अपनी पृथक् पहचान के साथ!

इससे बड़ा झूठ और कुछ नहीं हो सकता कि विष्णु आर्यों तथा शिव अनार्यों के देवता हैं अथवा अनार्यों का रंग काला तथा आर्यों का गोरा है। द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों में अधिकांश तो उत्तर में ही हैं। इसी प्रकार वैष्णव धर्म के प्राय: सभी आचार्य (शंकर, रामानुज, मध्व, निम्बार्क, वल्लभ) दक्षिण-भारत में पैदा हुए। इन सतही तर्कों से भारत को खण्डदृष्टि से देखना भयंकर राष्ट्रद्रोह है। रंग की चर्चा भी व्यर्थ है, अन्यथा राम को द्रविड़ और भरत को आर्य मानना होगा। भारतवासी सदा से ही 'भारतीय' रहे हैं। हाँ, यूनानी आक्रमणकारियों तथा शकों-हूणों ने अवश्य ही सिन्धु नदी को भारत का प्रवेश-द्वार मानकर, उसके ही आधार पर भारत को नये नाम से पहचाना। यूनानियों ने सिन्धु को **इण्डस** तथा भारत को **इण्डिया** कहा तो शकों-हूणों-खसों ने सिन्धु को हिन्दु तथा भारत को **हिन्दोस्ताँ** कहा। इस प्रकार 'भारतीय-इण्डियन तथा हिन्दू' तीनों शब्द एकार्थक हैं।

> है मित्र किताबों से बड़ा और नहीं
> बिन ग्रन्थों के कोई बना सिरमौर नहीं,
> वह घर है कहाँ वह तो जाहिलखाना
> जिस घर में किताबों का कोई ठौर नहीं।
> —**डॉ० मिर्ज़ा हसन नासिर**

वर्ल्ड बुक / कॉपीराइट डे 23 अप्रैल पर विशेष

अक्षर में कॅरियर

बुक पब्लिशिंग का फलक व्यापक है। इस क्षेत्र को भी आप कॅरियर के रूप में अपना सकते हैं।

नि:संदेह, आज के युग को इन्फॉर्मेशन और नॉलेज युग के तौर पर जाना जाता है। इसमें कोई दो राय नहीं कि नॉलेज या ज्ञान हासिल करने के लिए किताबों से बेहतरीन विकल्प दूसरा नहीं। ऐसे में अगर आपको भी लिखने-पढ़ने का शौक है, भाषा पर अच्छी पकड़ के साथ क्रिएटिव सोच रखते हैं, तो पब्लिशिंग हाउस के अलावा बतौर बुक पब्लिशर अपना कॅरियर संवार सकते हैं। देश की विभिन्न यूनिवर्सिटीज के अलावा तमाम संस्थान बुक पब्लिशिंग से सम्बन्धित कोर्सेज करा रहे हैं।

कोर्स

बुक पब्लिशिंग से सम्बन्धित कोर्सेज शॉर्ट टर्म और लांग टर्म दोनों तरह की अवधि में उपलब्ध हैं। विभिन्न संस्थानों से सर्टिफिकेट कोर्स से लेकर डिप्लोमा और डिग्री कोर्सेज किये जा सकते हैं। अन्नामलाई यूनिवर्सिटी जहां बाइंडिंग और फिनिशिंग में एक साल का सर्टिफिकेट कोर्स ऑफर करती है, वहीं नेशनल बुक ट्रस्ट, बुक पब्लिशिंग में चार सप्ताह का ट्रेनिंग कोर्स कराती है। इग्नू से पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन बुक पब्लिशिंग कोर्स किया जा सकता है, जिसकी अवधि एक वर्ष है। इसके अलावा इंस्टीट्यूट ऑफ बुक पब्लिशिंग से ई पब्लिशिंग का शॉर्ट टर्म कोर्स भी किया जा सकता है।

योग्यता

बुक पब्लिशिंग कोर्स के लिए विभिन्न संस्थानों ने न्यूनतम योग्यता किसी भी विषय से ग्रेजुएशन निर्धारित की है। फिर भी इस क्षेत्र में अच्छा कॅरियर बनाने के लिए कुछ अतिरिक्त क्षेत्रों का ज्ञान कैंडिडेट्स के लिए सहायक रहता है। जैसे एडिटोरियल डिपार्टमेंट को ही लें तो बुक पब्लिशिंग के साथ जर्नलिज्म का कोर्स करने वाले कैंडिडेट्स के लिए फायदेमंद रहता है। इसी तरह डिजाइनिंग का काम करने वालों के लिए डिजाइनिंग सॉफ्टवेयर्स की बारीक जानकारी सहायक रहती है।

सम्भावनाएँ

यहाँ कोर्स करने वाले प्रोफेशनल्स के लिए निजी और सार्वजनिक, दोनों क्षेत्रों के दरवाजे खुलते हैं। जैसे, डिस्टेंस लर्निंग की तमाम यूनिवर्सिटीज अपना कोर्स मटीरियल तैयार कराती हैं, जिनकी एडिटिंग से लेकर डिजाइनिंग और बाइंडिंग के लिए प्रोफ्रेशनल्स की जरूरत होती है, जहाँ जॉब तलाशी जा सकती है। जहाँ तक निजी क्षेत्र की बात है, तो तमाम बुक शॉप्स ऐसी हैं, जिन्होंने ई-पेपर और ई-बुक पर काम करना शुरू किया है। नॉन टेक्निकल सम्भावनाओं की फेहरिस्त में बुक पब्लिशिंग कोर्स करने वाले प्रोफेशनल्श प्रूफ रीडर व एडिटर के तौर पर सम्भावनाएँ तलाश सकते हैं। साथ ही सेल्स और मार्केटिंग में कॅरियर बनाया जा सकता है। टेक्निकल पार्ट में भी सम्भावनाओं का दायरा आज काफी बढ़ा है। किस किताब की बाइंडिंग स्पाइरल, स्पाइको, हार्ड बाउंड या फिर लैदर बाइंडिंग हो साथ ही उसका जैकेट, यह सब कुछ टेक्निकल पार्ट में आता है। बुक पब्लिशिंग के साथ कॉपीराइट के क्षेत्र में भी कॅरियर की सम्भावनाएँ तलाशी जा सकती हैं। इस क्षेत्र में काम करने के लिए एलएलबी की डिग्री जरूरी नहीं है। कॉपीराइट के काम के लिए तमाम लॉ फर्म्स, रजिस्टर्ड एजेंट्स रखने लगी हैं। दिल्ली के अलावा बिजनेस के लिहाज से महत्त्वपूर्ण कहे जाने वाले शहरों जैसे मुम्बई और बेंगलुरु में ऐसे प्रोफेशनल्स की डिमांड तेजी से बढ़ रही है।

आय

इस क्षेत्र के जानकारों के मुताबिक, बुक पब्लिशिंग का कोर्स करने वाले प्रोफेशनल्स को दस हजार रुपये तक की शुरुआती सैलरी ऑफर की जाती है।

क्या है कॉपीराइट ?

बुक पब्लिशिंग क्षेत्र के साथ कई तरह के लीगल आस्पेक्ट्स भी जुड़े हैं, इन्हीं में से एक कॉपीराइट या इन्टेलेक्चुअल प्रॉपर्टी राइट भी है। इसे इस तरह भी समझा जा सकता है कि किसी लेखक की किताब का कोई भी अंश उसके या फिर किताब के पब्लिशर की अनुमति के बिना न तो प्रकाशित किया जा सकता है और न ही उसकी नकल की जा सकती है। सुप्रीम कोर्ट के वकील सुंदर खत्री के अनुसार, कॉपीराइट के नियमों का उल्लंघन करने वाले पर लेखक या पब्लिशर कॉपीराइट एक्ट के तहत डैमेजेज क्लेम कर सकते हैं। सिंह ऐंड सिंह लॉ फर्म की वकील और कॉपीराइट मामलों की जानकार प्रतिभा एम सिंह के मुताबिक, कॉपीराइट या इन्टेलेक्चुअल प्रॉपर्टी राइट बुक पब्लिशर या फिर उसके लेखक के पास हो सकता है, इस सम्बन्ध में दोनों के बीच एक कॉन्ट्रेक्ट बनाया जाता है। जिसमें स्पष्ट लिखा जाता है कि उस किताब का कॉपीराइट किसके पास रहेगा।

अनुभव के साथ सैलरी में इजाफा होता जाता है। इग्नू की प्रोफेसर डॉक्टर सुनयना कुमार के मुताबिक, कई पब्लिशिंग हाउस ऐसे भी हैं, जो अपने एडिटर्स को प्रति पन्ने के अनुसार 50 से 100 रुपये की पेमेंट करते हैं। जहाँ तक अधिकतम सैलरी का सवाल है, तो ऑक्सफोर्ड और पैंग्विन जैसे पब्लिकेशन हाउसेज में ढाई से तीन लाख रुपये की मासिक सैलरी भी मिल सकती है।

प्रमुख संस्थान

- यूनिवर्सिटी ऑफ दिल्ली, माल रोड, नई दिल्ली
- कॉलेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज, शेख सराय, फेस-2, नई दिल्ली
- इंस्टीट्यूट ऑफ बुक पब्लिशिंग, एल-10, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110016
- शंकर्स एकेडमी ऑफ आर्ट ऐंड बुक पब्लिशिंग, 4 बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली
- नेशनल बुक ट्रस्ट,ए-5 ग्रीन पार्क, नई दिल्ली
- यूनिवर्सिटी ऑफ कोलकाता, 871, कॉलेज स्ट्रीट, कोलकाता, पश्चिम बंगाल
- महात्मा गाँधी यूनिवर्सिटी, प्रियदर्शिनी हिल्स पीओ, कोट्टयम, तमिलनाडु
- अन्नामलाई यूनिवर्सिटी अन्नामलाई नगर, तमिलनाडु
- इंदिरा गाँधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली

तकनीक ने बढ़ाई सम्भावनाएँ

बुक पब्लिशिंग के क्षेत्र में किस तरह कॅरियर बनाया जा सकता है, इस सम्बन्ध में इंदिरा गाँधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी की हेड ऑफ द डिपार्टमेंट (बुक पब्लिशिंग) सुनयना कुमार से हुई बातचीत के मुख्य अंश :

पब्लिशिंग का दायरा बढ़ने और नई तकनीक आने से इस सेक्टर में रोजगार की सम्भावनाएँ किस तरह बढ़ी हैं ?

देखिए, आज का युग ग्लोबलाइजेशन का युग है। यही वजह है कि ऑनलाइन एडिटिंग का काम तेजी से बढ़ा है। भारत में बैठकर विदेश में छपने वाली किताबों की एडिटिंग होने लगी है। इसके अलावा पेज ले-आउट और डिजाइनिंग का काम भी आउटसोर्सिंग के जरिये कराया जाने लगा है। यही वजह है कि इस क्षेत्र से जुड़ने वाले लोग घर बैठे भी काम कर सकते हैं। एक अहम बात यह भी है कि आज के दौर में ई-बुक्स का चलन तेजी से फैल रहा है। एमाजोन, गूगल, किंडल जैसी तमाम संस्थाएँ इस दिशा में तेजी से बढ़ रही हैं। इस सबको देखते हुए आज बुक पब्लिशिंग अपार सम्भावनाओं का क्षेत्र बनता दिख रहा है।

इस क्षेत्र में कितने तरह के कॅरियर विकल्प हैं ?

नॉन टेक्निकल में एडिटिंग, प्रूफरीडिंग आदि को शामिल कर सकते हैं, जबकि टेक्निकल में डिजाइनिंग, ले-आउट, ब्रोशर, बाइंडिंग, सेल्स, मार्केटिंग, डिस्प्ले आदि चीजें आती हैं। बुक पब्लिशिंग कोर्स में इन सबकी जानकारी तो दी जाती है, लेकिन कोर्स करने वाले को अलग से नॉन टेक्निकल की बारीकियाँ सीखनी होती हैं।

पब्लिशिंग सेक्टर में एंट्री पाने के लिए किस तरह की योग्यता जरूरी है।

इसके लिए कम से कम ग्रेजुएट होना आवश्यक है। इग्नू ने फेडरेशन ऑफ इंडियन पब्लिशर्स के साथ टाई-अप किया है। इस संस्था का कहना है कि पब्लिशर्स ऐसे कैंडीडेट्स को ही अपने साथ जोड़ना चाहते हैं, जिनके पास कम से कम ग्रेजुएशन की डिग्री हो।

निजी सेक्टर में किस तरह के अवसर हैं ?

ज्यादातर निजी कम्पनियाँ अब पब्लिक रिलेशन विभाग बनाने लगी हैं। इन कम्पनियों में निकलने वाले इन हाउस न्यूज लैटर या फिर ब्रॉशर डिजाइनर, बुक सेल्स और उनकी मार्केटिंग के अलावा राज्यसभा और लोकसभा में सेशन के वक्त नोटिंग लेने वाले एग्जीक्यूटिव्स की जरूरत होती है।

सिमट रहा भाषाओं और बोलियों का संसार

भारत विविधताओं का देश है। यहाँ के बारे में कहा जाता है कि यहाँ हर कोस पर पानी और हर चार कोस पर वाणी यानी भाषा बदल जाती है। पर लगता है यह मुहावरा कुछ दिनों में पुराना पड़ जाएगा। वस्तुत: भारत में बोली जाने वाली सैकड़ों भाषाओं में से 196 खत्म होने के कागार पर हैं। इससे भी ज्यादा चिन्ताजनक पहलू यह है कि बोलियों का पूरा संसार ही सिमटता जा रहा है। दुनिया में बोली जाने वाली 6000 भाषाओं में से 2500 का अस्तित्व खतरे में है।

संयुक्त राष्ट्र की पहली 'स्टेट ऑफ द वर्ल्ड्स इंडीजीनस पीपुल्स रिपोर्ट' में इस बात का उल्लेख किया गया है कि दुनियाभर में छह से सात हजार तक भाषाएँ बोली जाती हैं। इनमें बहुत सी भाषाओं पर लुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है। इनमें से अधिकतर भाषाएँ बहुत कम लोग बोलते हैं जबकि बहुत थोड़ी सी भाषाएँ बहुत सारे लोगों द्वारा बोली जाती हैं। सभी मौजूदा भाषाओं में से लगभग 90 फीसदी अगले 100 सालों में लुप्त हो सकती हैं, क्योंकि दुनिया की लगभग 97 फीसदी आबादी इनमें से सिर्फ चार फीसदी भाषाएँ बोलती हैं। यूनेस्को द्वारा किए गए अध्ययन के मुताबिक ठेठ आदिवासी भाषाओं पर विलुप्ति का खतरा बढ़ता ही जा रहा है और इन्हें बचाने की आपात स्तर पर कोशिशें करनी होंगी।

यूनेस्को द्वारा कराये गये इस अध्ययन पर गौर करें तो इस रिपोर्ट में सबसे ज्यादा खतरा भारत की भाषाओं पर बताया गया है। जहाँ भारत में यह 196 भाषाओं पर हैं, वहीं अमेरिका व इण्डोनेशिया क्रमश: 192 व 147 भाषाओं पर खतरे के साथ दूसरे व तीसरे नम्बर पर हैं। भाषाओं के मामले में सर्वाधिक समृद्ध पापुआ न्यू गिनी में 800 से ज्यादा भाषाएँ बोली जाती हैं, जबकि वहाँ केवल 88 भाषाओं पर ही खतरा है। हाल ही में अंडमान निकोबार द्वीप समूह की तकरीबन 65000 साल से बोली जाने वाली एक आदिवासी भाषा हमेशा के लिए विलुप्त हो गई। वस्तुत: कुछ दिन पहले अंडमान में रहने वाले बो कबीले की आखिरी सदस्य 85 वर्षीय बोआ सीनियर के निधन के साथ ही इस आदिवासी समुदाय द्वारा बोली जाने वाली बो भाषा भी लुप्त हो गई। ग्रेट अंडमान में कुल 10 मूल आदिवासी समुदायों में से एक बो समुदाय की इस अन्तिम सदस्य ने 2004 की विनाशकारी सुनामी में अपने घर बार को खो दिया था और सरकार दारा बनाए गए कांक्रीट के शेल्टर में स्ट्रैट द्वीप पर गुजर बसर कर रही थी। श्बोश भाषा के बारे में भाषाई विशेषज्ञों का मानना है कि यह भाषा अंडमान में प्री-नियोलोथिक समय से इस समुदाय द्वारा उपयोग में लाई जा रही है। दरअसल में ये भाषाएँ शहरीकरण के चलते दूर दराज के इलाकों में अंग्रेजी और हिन्दी के बढ़ते प्रभाव के कारण हाशिए पर जा रही हैं। गौरतलब है कि 1974 में आइसले ऑफ मैन में नेड मैडरेल की मौत के साथ ही 'मैक्स' भाषा खत्म हो गई, जबकि वर्ष 2008 में अलास्का में मैरी स्मिथ जीन्स के निधन से 'इयाक' भाषा का अस्तित्व समाप्त हो गया। दुनिया की एक तिहाई भाषाएँ अफ्रीकी देशों में बोली जाती हैं, आकलन है कि अगली सदी के दौरान इनमें से दस फीसदी खत्म हो जाएँगी। यूक्रेन में कराइम भाषा बोलने वाले केवल छह लोग हैं, जबकि अमेरिका के आकलाहोमा में विशिता भाषा केवल दस लोगों द्वारा बोली जाती है। कुछेक देशों ने इस खतरे को भाँपते हुए कदम भी उठाये हैं, नतीजतन—ब्रिटेन की भाषा 'कॉर्निश' और न्यू कैलेडोनिया की भाषा श्श को पहले खत्म हुआ मान लिया गया था लेकिन अब इन्हें फिर से बोला जाने लगा है।

वस्तुत: यह सिर्फ किसी भाषा के खत्म होने का ही सवाल नहीं है, बल्कि इसी के साथ उस समुदाय और उससे जुड़ी कई तरह की सांस्कृतिक विरासत के नष्ट होने का अहसास भी होता है। इस तरफ देशों को ध्यान देने की जरूरत है, अन्यथा हम अपनी विरासत को यूँ ही खोते रहेंगे।

महान लेखक

जीरो से हीरो बने ट्वेन

*बच्चों के प्रिय अमेरिकी लेखक मार्क ट्वेन के निधन के सौ साल (**21 अप्रैल को**) पूरे होने पर पूरी दुनिया उन्हें याद कर रही है। मात्र 11 साल की उम्र में अपने पिता को खो देने वाले ट्वेन आखिर कैसे सफलता के शिखर पर पहुँचे, आइये जानते हैं...*

एक था बच्चा। बेहद शैतान। अपने माता-पिता की छठी संतान। नाम सेमुअल क्लिमेंस। पढ़ने-लिखने में उसका मन नहीं लगता। जो मन में होता, बस वही करता, लेकिन था बहुत प्रतिभाशाली। चित्रकारी और किस्से-कहानियाँ बनाना तो था उसके बाएँ हाथ का काम, लेकिन और किसी काम में वह नहीं लगाता था ध्यान।

मार्क ट्वेन का अर्थ

सैमुअल का जन्म तो हुआ फ्लोरिडा, मिसौरी में, पर चार साल की उम्र में उसका परिवार मिसीसिपी नदी के किनारे बसे हेनिबल गाँव में स्थानान्तरित हो गया। एक दिन उसे घर के पास बच्चों का शोर और अजीब सी सीटी की आवाज सुनाई दी। बच्चे नदी की ओर भाग रहे थे। सैमुअल भी सीटी की आवाज की दिशा में भागा। दरअसल, गाँव में नदी तट पर स्टीमर आया था। बच्चे उसे देखकर शोर मचा रहे थे। स्टीमर का कैप्टन एक छोटी सी नाव पर बैठकर एक लम्बे से बाँस से पानी की गहराई नाप रहा था। जहाँ उसने बाँस गाड़ दिया, वहीं स्टीमर आकर रुक गया। सैमुअल कैप्टन की कारगुजारी ध्यान से देख रहा था। जब कैप्टन किनारे आया, सैमुअल ने स्टीमर की तरफ इशारा करके उससे पूछा, ''यह क्या है?''

''इसे स्टीमर कहते हैं, यह पानी पर चलने वाली गाड़ी है।''

''लेकिन आप बाँस से गहराई क्यों नाप रहे थे?''

''क्योंकि स्टीमर वहीं खड़ा किया जा सकता है, जहाँ पानी कम से दो फैदम (बारह फीट) हो। बाँस में दो फैदम का निशान बना होता है, इस निशान को मार्क ट्वेन कहते हैं''

सेमुअल क्लीमेंस को बाँस में बने मार्क ट्वेन यानी दो फैदम के निशान की अवधारणा बहुत अच्छी लगी। उसने जब कहानियाँ, उपन्यास और लेख वगैरह लिखने शुरू किए, तो अपने असली नाम की जगह उसने मार्क ट्वेन का प्रयोग किया। धीरे-धीरे इसी नाम के साथ वह अमेरिका के बड़े साहित्यकार बन गए।

बचपन से ही संघर्ष

बचपन में ही पाँच भाई-बहन सैमुअल के सामने ही चल बसे। जब वह ग्यारह साल का हुआ, तो उसके पिता का निमोनिया से देहांत हो गया। इसी के साथ उस पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। समस्या थी जीविका की। वह पढ़ा लिखा तो था नहीं, आड़े वक्त में काम आयी उसकी प्रतिभा। कुछ समय मजदूरी करने के बाद उसने एक डेली न्यूजपेपर में टाइपसेटर का काम किया और कार्टून स्केचेज बनाने लगा। स्टीमबोट का काम सीख कर वह पायलट भी बना, पर वह अपनी मौजूदा जीविका से सन्तुष्ट नहीं था। इसलिए 18 साल का होने पर उसने हैनिबल गाँव छोड़ दिया और न्यूयॉर्क में प्रिंटर का काम करने लगा। उसने अखबारों में सम्पादक की नौकरी भी की।

लाइब्रेरी बना स्कूल

न्यूयॉर्क में दिन भर की मेहनत के बाद ट्वेन शाम को कुछ घण्टे पब्लिक लाइब्रेरियों में अध्ययन करने लगा। वह किसी स्कूल से नहीं, बल्कि पब्लिक लाइब्रेरियों से एजुकेटेड हुआ। वह जो भी लिखता और कार्टून स्केचेज बनाता, धीरे-धीरे वे अत्यन्त लोकप्रिय होने लगे। उसकी व्यंग्यात्मक शैली को लोगों ने बहुत पसन्द किया और वह स्वयं प्रसिद्ध होने लगा। एक समय ऐसा भी आया, जब कोई औपचारिक डिग्री नहीं हासिल करने वाले मार्क लेक्चरर के रूप में भी प्रसिद्ध हो गए। इतना ही नहीं, साहित्य में योगदान के लिए विश्वविद्यालयों ने उन्हें डी०लिट्० की उपाधि से भी सम्मानित किया।

साहित्य में योगदान

मार्क ट्वेन ने अपने बचपन की शैतानियों पर उपन्यास 'टॉम स्वैयर' लिखा। इस उपन्यास को दुनिया भर के बच्चों ने हाथोंहाथ लिया। इसे विश्व बाल साहित्य में मील का पत्थर माना जाता है। टॉम एक ऐसा चरित्र है, जो शरारती होते हुए भी चतुर है और अच्छे काम भी करता है। फिर टॉम स्वैयर की सीरीज शुरू हो गई। इसके अलावा उनका उपन्यास 'एडवेंचर्स ऑफ हकलबेरी फिन' भी बहुत मशहूर हुआ।

मार्क ट्वेन को अंग्रेजी साहित्य का शुरुआती बड़ा व्यंग्यकार माना जाता है। बचपन में मुसीबतों का पहाड़ झेलने वाले ट्वेन ने टीनएज में ही पेट पालने के लिए कई तरह की जीविका अपनाई। इसके बावजूद पढ़ने-लिखने के शौक के चलते बचे हुए समय में लाइब्रेरी में पढ़ाई की और धीरे-धीरे लेखन की दुनिया में छा गए। यही वजह थी कि वे बड़े साहित्यकार बने और अंग्रेजी लिटरेचर में उनका नाम आदर के साथ लिया जाता है।

—दैनिक जागरण से साभार

अत्र-तत्र-सर्वत्र

डॉ० परमानन्द पांचाल केन्द्रीय हिन्दी समिति के सदस्य मनोनीत

भारत सरकार के एक संकल्प द्वारा प्रधानमन्त्री जी की अध्यक्षता में केन्द्रीय हिन्दी समिति का गठन किया गया जो हिन्दी के प्रचार-प्रसार तथा भारत सरकार की राजभाषा नीति के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण दिशा-निर्देश निर्धारित करने वाली सर्वोच्च समिति है। हिन्दी के प्रतिष्ठित विद्वान डॉ० परमानन्द पांचाल को भी केन्द्रीय सरकार द्वारा इसका सदस्य मनोनीत किया गया है। डॉ० परमानन्द पांचाल हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की शाखा दिल्ली के अध्यक्ष हैं।

भारतीय मूल के लेखक का उपन्यास कनाडाई कोर्स में

टोरंटो। भारतीय मूल के कनाडाई लेखक बी०बी० मुखर्जी के पहले उपन्यास 'दैट यूरोपियन समर' को कनाडा विश्वविद्यालय में बी०ए० आनर्स (इंग्लिश) के कोर्स में शामिल किया गया है। इस उपन्यास में एक भारतीय सुन्दरी और नीली आँखों वाले आस्ट्रिया के एक कुलीन की प्रेम कहानी है।

प्रकाशन जगत में 'आईपाड' क्रान्ति

3 अप्रैल, 2010 से प्रकाशन जगत में व्यावसायिक-कार्य, मनोरंजन और आई-फोन सुविधा से युक्त 'सुपरचार्ज्ड' 'ई-रीडर' ने दस्तक दे दी है। आई-वर्क उद्योग से जुड़े हुए लोग तकनीक की नयी सम्भावनाओं को संरक्षित करने की कोशिश में जुट गये हैं। उदाहरण के तौर पर न्यूयार्क-टाइम्स समूह 'आई पाड' प्रयोक्ताओं के लिये अपने समाचार-पत्र का 'आई पाड' संकेन्द्रित संस्करण निकालने की तैयारी कर रहा है। पाठ्य पुस्तक प्रकाशकों ने भी छात्रों की सुविधा के लिये यह तकनीक अपनाने की शुरुआत कर दी है। इस तकनीक द्वारा सामान्य छात्र वर्ग 10 पाठ्य पुस्तकों को एक ही 'आईपाड' द्वारा पढ़ सकेंगे।

लेखकीय सेवाएँ और कम्पनी के जोखिम

इन दिनों लेखक लोग अपने ही व्यय पर अपनी पुस्तकों का प्रकाशन कर रहे हैं। लेखकीय-सेवा के लिये अब इस तरह की कम्पनियाँ भी आ गयी हैं जो लेखक से प्रकाशन, वितरण आदि से सम्बन्धित शुल्क लेकर अपनी सेवाएँ प्रदान करती हैं। वस्तुत: ऐसी कम्पनियों की कमाई पुस्तक-विक्रय से नहीं होती बल्कि लेखक द्वारा चुकाये गये मूल्य में ही उनका लाभांश भी निहित होता है। इस तरह का व्यवसाय प्रकाशन-वितरण आदि का दायित्व तो निभा देता है किन्तु किसी भी प्रकाशित पुस्तक को 'बेस्ट-सेलर' की ऊँचाई नहीं प्रदान कर सकता।

कोकिल बोल रहा

युगेश्वर

" सोलह निबन्धों का संग्रह—छोटा, किन्तु सागर समेटे है। आधे से अधिक निबन्धों का सन्दर्भ स्वयं ललित है। इसलिए कि वे किसी न किसी कविता के अंग हैं—जीवित, जाग्रत बिम्बित अंग।"

आकार
डिमाई

प्रकार
सजिल्द

पृष्ठ
88

ISBN : 81-7124-340-1 • मूल्य : रु० 80.00

(पुस्तक के एक निबन्ध का अंश)

यह नीड़ मनोहर कृतियों का

नाम और नाम जैसे काम का सम्बन्ध शायद होता है। धनपतिया दरिद्र और धर्मदास महापापी होते हैं। इसका बड़ा कारण है। काम से नाम का पहले रखा जाना। सभी नाम कर्म के पूर्व रखे जाते हैं। माता पिता द्वारा रखे जाते हैं। बालक के रखे जाते हैं। कभी दुलार प्यार से। कभी अपनी मनोगत इच्छा से। अपने संस्कार से। जाति, धर्म और भाषा से। एक ही कर्म करने वालों में अनेक नाम रूप के लोग होते हैं। उनके नामों में भी भिन्नता होती है। नाम का उद्देश्य भिन्नता और पहचान बताना है। रूप की भिन्नता परमात्मा द्वारा। नाम की भिन्नता माता पिता द्वारा। रूप और नाम में भिन्नता है। अत्यन्त सरल शांत व्यक्ति का नाम बाँके लाल या भीम होता है। लेखक लोग प्राय: ही काम के आधार पर नाम रखते हैं। राम चारों भाइयों का नाम गुरु वशिष्ठ ने रखा। 'स्वमति अनुरूप' रखा। पुराणों को देखिए। रावण, मेघनाद, युधिष्ठिर, भीम, दुर्योधन आदि नाम कभी कर्म, कभी रूप नाम हैं। कामायनी में प्रतीक नाम हैं। गोदान में स्थिति नाम हैं। कवि लोग अपना उपनाम रखते हैं। नहीं भी रखते हैं। फिर भी उनकी प्रसिद्धि उनके नामांश का उपनाम के रूप में प्रयोग करती है। गुप्त जी, पंत, प्रसाद, द्विवेदी जैसे नाम उपनाम न होकर नाम के अंश हैं। किन्तु प्रचलन ने इन्हें उपनाम सा बना दिया है। प्रसाद जयशंकर प्रसाद, पंत सुमित्रानन्दन पंत हैं। गांधी मोहनदास करमचंद गांधी हैं। इस प्रकार के प्रयोगों का उद्देश्य संक्षिप्तीकरण है। पूरा नाम लेने के कष्ट से बचना है। बड़ा नाम कौन ले ? संक्षेप से काम चल जाता है। इसी में कभी-कभी संयोग भी देखा जाता है। जयशंकर प्रसाद के दो शब्दों को देखिए। शंकर और प्रसाद। जय शंकर प्रसाद शंकर भक्त हैं। शंकर की जय बोलते हैं। शैवागम के उपासक। शैव दर्शन, कश्मीरी शैवागम वाले प्रसाद का अर्थ है प्रसन्नता। प्रसाद और प्रसन्न दोनों में सद् धातु के अनेक अर्थ हैं। किन्तु उपसर्ग एवं प्रत्ययों ने इन्हें अलग-अलग रूप देकर भी अर्थ में एक सा बनाया है। दोनों ही आनन्द हैं। आनन्द की अभिव्यक्ति हैं। प्रसाद का मूल दर्शन भी आनन्द है। कामायनी प्रलय की पीड़ा से आरम्भ कर आनन्द तक की यात्रा करती है। दुख का सम्पूर्ण निषेध करती है। दुख को खारिज करना ही आनन्द है।

भारत में दो दर्शन हैं। एक है दुखवादी। इनकी दृष्टि में संसार दुख है। बुद्ध और अद्वैत वेदांती संसार को दुख मानते हैं। वेदांती कबीर कहते हैं—दुनिया भांड़ा दुख का। भरी मुँहा मुँह दुख। दो बातें। संसार एक भांड है। बर्तन है। मिट्टी के बर्तन भांड कहलाते हैं। यह संसार भांड आदि से अंत तक लबालब है। दुखों से भरा है। सभी मुख भरे हैं। सभी मुखों में दुख है। दुख का मुख। मुख ही दुख। संसार रूपी यह भांड मिट्टी का है। कभी न कभी टूट जायगा। तब निश्चय ही संसार का भंडा फूट जायगा। इस भंडा के फूटते ही पता लगेगा संसार कितना मिथ्या है। मरण शील है। नाश धर्मा है। भला बताइए नाश धर्मा किसी को सुख कैसे देगा ? जिसके पास जो है। वही तो देगा। मरण धर्मा मरण, नाश देगा। तब पता लगेगा। यह मरणशील संसार सुख का कल्पना मात्र है। सुख नहीं है। व्यक्ति सुख स्वप्न देख सकता है। सुख नहीं देख सकता है। जो नहीं है, उसे कैसे देख सकता है ? सुख तो है सनातन में। सनातन में सनातन सुख। सुख चाहते हो न। अवश्य चाहते हो। कौन है जो दुख चाहता है। सुनता हूँ। पढ़ा भी है। कुंती ने श्रीकृष्ण से दुख माँगा था। किन्तु सामान्य जन ऐसे नहीं होते। वे दुख से सम्पूर्ण छुटकारा चाहते हैं। इसी को मुक्ति भी कहते हैं। कुंती की बात मत करो। वह असामान्य थीं। पति रहते पति का सुख नहीं मिला। छ: पुत्रों की माँ होकर भी पुत्र सुख से वंचित रही। सबसे बड़े पुत्र को पुत्र कहने में भी संकोच। एक दूसरा दल है आनंदों का। आनंदों को संसार दुख नहीं। सुख। आनन्द लगता है। महादेवी वर्मा को छोड़कर छायावाद के तीन बड़े कवि दुखवादी नहीं हैं। निराला को लीजिए। उनके जीवन में दुख है। किन्तु दुखवाद नहीं है। छायावाद सौन्दर्य की कविता है। यहाँ सब सुन्दर हैं। सुन्दर सुख है। सुन्दर हैं विहग, सुमन सुन्दर, मानव तुम सब से सुन्दरतम। प्रसाद की दृष्टि में यह संसार मनोहर कृतियों, कर्मों का घोंसला है। कर्म का रंगमंच है। इस नीड़ में मनुष्य पक्षी का निवास है। स्त्री, पुरुष, नर, मादा इस घोसले के निवासी हैं। सृष्टि करते हैं। सृष्टि कर्म, संतान कर्म। सुख का कर्म। कर्म और संतान सुख हैं। करने, रहने के अद्वैत का सुख। संसार मूलत: सुख नीड़ है। यह नीड़ परमात्मा की रचना है। परमानन्द ही जीव बन कर, स्त्री, पुरुष। संतान बन कर संसार नीड़ का वासी है। सभी लोग इस संसार नीड़ में प्रवेश कर, निवास कर सुखी हैं। यह नीड़ न मिथ्या है। न नाशवान्। यह स्वयं सुख है। सुख का आधार है। दूसरों को भी सुख देता है। प्रसाद जी संसार को दुख कहने वालों को जगाते हैं। अरे भाई, दुखी क्यों होते हो ? लगता है तुम निर्बल हो। तुममें ठहरने की शक्ति नहीं है। न तुम ठहर सकते हो। न संगी को ठहरा सकते हो। तुम नीड़ को देख डरे हो। इसी से तुम्हें नीड़ का सुख नहीं मिल रहा है। अपने में शक्ति लाओ। वीर्यवान् बनो। तुम शक्ति से। बल से उत्पन्न हो। यही यहाँ की। इस नीड़ की परम्परा है। जिसमें जितना बल है। वह उतनी देर तक ठहरता है। रहता है। ठहर कर। रह कर संसार नीड़, नीड़ संसार का आनन्द लेता है। मनोहर कृतियाँ करता है। अपना मन हारता है। दूसरे के मन का हरण करता है। इस हरण को वरण का पर्याय समझो। परमात्मा ने संसार को अपने सुख के लिये उपजाया था। सुख कारण उपजायो। वह स्वयं आनन्द है। सच्चिदानन्द है। आनन्द से, आनन्द द्वारा आनन्द सृष्टि करता है। दयालु प्रभु सबको देता है। सृष्टि कर्म सबसे बड़ा आनन्द है। सृष्टि कर्म आनन्द है तो सृष्ट, संसार क्यों दुख होगा ? किन्तु उस गैरिक वस्त्र को क्या कहा जाय ? उसने हरित, हरियाली को छोड़कर गेरू धारण कर लिया है। गेरू घरेलू के विपरीत है। जिसने घर द्वार छोड़ा। उसे संसार कैसे अच्छा लगेगा ? अच्छा लगता तो घर छोड़ता ही क्यों ? घर द्वार, संतति ही तो संसार है। व्यक्ति से व्यक्ति संसरण संसार है। अव्यक्त को व्यक्त बनाना। व्यक्त में संसरण संसार है। हमारा सम्पूर्ण अस्तित्व संसरणशील है। संसरण ही संतान है। सनातन है। अत: संसार है। स्वर्ग की कल्पना भी संसारी है। स्वर्ग भी संसार है। संसरण कर रहा है। स्वर्ग के निवासी भी पुण्य क्षीण होने पर गिरते हैं।...

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

लालाजी का पर्दा

अशोकजी

'' कड़ी धूप में चलते-चलते, किसी पेड़ की छाया में, जो सुख मिलता है, वही संघर्षमय जीवन में हास्य-विनोद के कुछ क्षण सुख देते हैं।

'लालाजी का पर्दा' ऐसी ही हास्य विनोद की कहानियों का संग्रह है। इस संग्रह की कहानियाँ समाज के विभिन्न व्यक्तियों और उनके व्यवहार के मनोरंजक प्रसंग प्रस्तुत करती हैं।''

आकार
डिमाई

प्रकार
सजिल्द व अजिल्द

पृष्ठ
162

सजिल्द : मूल्य : रु० 120.00

अजिल्द : मूल्य : रु० 80.00

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

हजामत का मैच

एक-दो बरस से नहीं, पीढ़ियों से लॉ होस्टल में गंगा नाई का एकच्छत्र साम्राज्य था। युनिवर्सिटी खुलने पर होस्टल के वाशिंदों की नजर सबसे पहले गंगा नाई की गोल-मटोल तोंद पर पड़ती थी और उसका हँसता चेहरा उनका स्वागत करता था। तांगा रुकते ही वह दौड़कर सामान उतरवाने, नौकर को पुकारने और कमरा खुलवाकर उसमें नवागंतुक को पधारने में इस कदर व्यस्त हो जाता था कि जैसे उसे पहले से ही उनके आने की खबर रही हो और वह उनकी प्रतीक्षा में सन्नद्ध रहा हो। पहले दिन से ही उसका व्यवहार ऐसा रहता था जैसे वह आपका सदा से परिचित रहा हो। घर से बिछुड़े नये आगंतुक को गंगा नाई के व्यक्तित्व में कुछ ऐसी आत्मीयता नजर आती थी कि उसका सिक्का उसके दिल पर जम जाता था। फिर तो ज्यों-ज्यों दिन बीतते थे, गंगा आपके जीवन का एक अंग बनता जाता था।

सेफ्टीरेजर के युग में भी गंगा अविचल चट्टान की भाँति खड़ा था। हफ्ते में तीन शेव और महीने में दो हेयर-कट की एक रुपये फीस तो गंगा के साम्राज्य का एक हलका-सा कर मात्र था, उसकी असल सर्विस तो बाबू को सबेरे उठाना, गरम पानी में साबुन का लैदर लगाकर दाढ़ी बना देना, नौकर को बुला देना, मेस से चाय भिजवा देना और इसी प्रकार के अन्य फुटकर पर अत्यन्त आवश्यक काम थे।

पर समय के साथ लॉ होस्टल ने भी पलटा खाया। लॉ होस्टल के बाबू भी अब वैसी मस्त तबीयत के नहीं होते थे, जिनके बदन पर से गंगा बेतकल्लुफ नयी लिहाफ खींचकर और ओढ़कर यह कहता हुआ चला जाता था कि बाबू दूसरी बनवा लेना।

अब ऐसे भी बाबू आने लगे थे जिन्हें गंगा 'ओल्ड फैशंड' (पुराने ढर्रे) का नजर आता था। उसकी कला में उन्हें फूहड़पन मालूम पड़ता था। उसकी आत्मीयता मुँहलगापन मालूम देती थी। ऐसे बाबुओं को भी गंगा राम-राम कहना न भूलता था चाहे वे उत्तर दें या न दें। परीक्षा के वक्त 'गुडलक' कहना और जाने के वक्त दरवाजे तक पहुँचाना भी उसका नियम था।

गंगा को यह जानते देर न लगती थी कि किस बाबू के बड़े भाई, चाचा या पिता या और कोई रिश्तेदार, पहले लॉ होस्टल में रह चुके हैं। ऐसे बाबुओं पर तो उसका पुश्तैनी अधिकार कायम हो जाता था। उन्हें वह हर्गिज न छोड़ता था। और इसी रिश्ते से गंगा ने मेरी जजमानी भी पा ली थी।

मगर मेरा विश्वास भी भाई साहब के रिमार्क से हिल गया। भाई साहब होस्टल के 'ओरेकिल' (देववाणी-वाहक) थे। उनकी राय टेनिस के बल्ले के चुनाव से लेकर पतलून के फाल तक सब बातों में प्रामाणिक मानी जाती थी। इसीलिए मैं चुप रहा जब उन्होंने मेरे ताजा कटे सिर अर्थात् बालों को देखकर नापसन्दगी की मुद्रा से सिर हिलाते हुए कहा—'भाई चाहे जो कहो, कल्लू बाल अच्छे काटता है। गंगा में दरबारदारी है, मगर हाथ तो कल्लू का ही है।'

❑ ❑ ❑

मैंने भी मन ही मन इरादा कर लिया कि अगली बार कल्लू से ही बाल बनवाऊँगा। कल्लू खाँ गंगा का सबसे तगड़ा प्रतिद्वन्द्वी था। सन् '१४ की लड़ाई में वह लाम पर हो आया था और इसीका रोब वह हमेशा गाँठा करता था। मुसलमान होने से उसकी जबान भी सड़ाक से हुजूर-सरकार के साथ चलती थी और होस्टल के फैशनेबुल बाबू उसीसे बाल कटवाना पसन्द करते थे। उसकी 'जर्मन हेयर कट' तो खास चीज मानी जाती थी।

अस्तु, मैंने कल्लू को आजमाने का पक्का इरादा कर लिया। मगर सबसे बड़ी दिक्कत इसमें गंगा की थी। मैं चाहता था कि या तो गंगा की अनुपस्थिति में या किसी ऐसे समय गंगा को बुलाऊँ जब वह न आ सके और मैं कल्लू से बाल कटवाकर उसके आगे मजबूरी जाहिर कर दूँ।

होस्टल में एक तीसरा नौजवान नाई भी था छोटेलाल। कुछ लोगों का ख्याल था कि छोटेलाल कल्लू से भी श्रेष्ठ है। पर लफ्फाजी और चालाकी न होने से वह उतना चलता नहीं था। गंगा छोटेलाल को कुछ मानता था, क्योंकि छोटेलाल उसे दादा कहकर पुकारता था और अदब करता था। अक्सर काम अधिक आ जाने पर गंगा उसे अपना प्रतिनिधि भी बना देता था। पर कल्लू खाँ से गंगा को सख्त चिढ़ थी। गंगा के दिल को चोट पहुँचाने का इससे बढ़कर उपाय नहीं था कि कल्लू खाँ से बाल बनवा लो।

दूसरे हफ्ते में मैंने एक दिन कल्लू से चुपके से कहा—'अरे भाई कल्लू, तुम्हें फुरसत हो तो इस एतवार को जरा बाल बना दो।'

'किस वक्त हुजूर ?'

'यही करीब 12 बजे।'

'बहुत अच्छा हुजूर, मैं ठीक वक्त पर हाजिर हो जाऊँगा।'

मैंने कल्लू को 12 बजे का वक्त इसलिए दिया कि मैंने एक दूसरे साहब को गंगा को इसी वक्त आने को कहते सुना था और मैं जानता था कि एतवार को गंगा 10 से 12॥ बजे तक एकदम खाली न रहेगा। गंगा के आने पर मैंने उसे भी यही वक्त दिया। गंगा रोब से बोला—'एतवार को बनवाकर क्या करोगे, मैं सोमवार को एकदम सबेरे आकर बना दूँगा।'

मैंने कहा—'नहीं गंगा, मुझे एतवार को हजामत बनवानी जरूरी है। मुझे शाम को दावत में जाना है।'

गंगा ने कहा—'यह तो बड़ी मुश्किल हुई, उस वक्त छोटे भी खाली नहीं है। खैर, 11॥ बजे आकर मैं बना जाऊँगा।'

अब क्या होगा—गंगा 11॥ बजे आ धमके और कैंची लेकर बैठ जाय तो कल्लू क्या करेगा ?

मैं कुछ सोच न सका और गंगा चला गया।

❑ ❑ ❑

दूसरे दिन रविवार को मैंने 11 बजे टल जाने की सोची। गंगा थोड़ी देर इन्तजार करने के बाद अपने-आप लौट जायगा। मैं ठीक 11 बजे उठा और 'पी० सी० बनर्जी' में जाकर अपने दोस्त कपूर के कमरे में बैठ गया। वहाँ गप लड़ रही थी। 11॥ बज चुके थे। मैं सोच ही रहा था कि 12 बजने को आवे तो उठकर अपने कमरे में चलूँ कि क्या देखता हूँ कि गंगा सामने से चले आ रहे हैं।...

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

सम्मान-पुरस्कार

कवि दानिश को मिला रामदास अकेला पुरस्कार

वाराणसी। कवि व कथाकार दानिश जमाल सिद्दीकी 'दानिश' को रविवार, 11 अप्रैल को वर्ष 2009 के रामदास अकेला पुरस्कार से सम्मानित किया गया। प्रगतिशील लेखक संघ, अशोक मिशन एजुकेशनल सोसाइटी व सर्जना साहित्य मंच के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित समारोह में कथाकार प्रो० काशीनाथ सिंह ने दानिश को पुरस्कार स्वरूप पाँच हजार की धनराशि, स्मृति चिह्न व सम्मान-पत्र प्रदान किया।

डॉ० नीरजा को सम्मान

वाराणसी। साहित्यकार डॉ० नीरजा माधव को अखिल भारतीय साहित्य परिषद की ओर से 'राष्ट्रीय साहित्य-सर्जक सम्मान-2010' से सम्मानित किया गया है। मध्य भारतीय हिन्दी साहित्य सभा के तत्वावधान में गत दिनों ग्वालियर में एक समारोह में यह सम्मान दिया गया। मध्य प्रदेश के स्वास्थ्य मन्त्री अनूप मिश्र एवं सांसद प्रभात झा ने प्रशस्ति पत्र, 21 हजार रुपये व शाल ओढ़ाकर यह प्रतिष्ठित सम्मान दिया।

प्रो० द्विवेदी को भारत शिक्षा रत्न सम्मान

ग्लोबल सोसायटी फार हेल्थ एण्ड ऐजुकेशन ग्रोथ नई दिल्ली द्वारा विगत दिनों दिल्ली में राष्ट्रीय सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस सम्मान समारोह में नगर के प्रबुद्ध व्यक्तित्व एवं विचार विज्ञ प्राध्यापक कृष्णकुमार द्विवेदी को भारत शिक्षा रत्न सम्मान प्रदान किया गया। शैक्षिक जन-जागरूकता एवं उत्कर्षीय अकादमिक गतिविधियों के लिये उन्हें सम्मानित किया गया। प्राध्यापक द्विवेदी को सम्मान में एवार्ड ट्राफी, स्वर्णिम मैडल एवं प्रमाण पत्र भारत के मित्र राष्ट्र तजाकिस्तान के राजदूत महामहिम श्री सईद बेग सईदोव, भारत के पूर्व निर्वाचन आयुक्त डॉ० जी०व्ही०जी० कृष्णमूर्ति, प्रो० एस०एस० भाकरी निदेशक यू०एन० एण्ड यूनेस्को अध्ययन संस्थान तथा दिल्ली के अनीस दुर्रानी के कर कमलों द्वारा प्रदत्त किया गया।

'संकल्प गरिमा' अलंकरण

ओजस्वी कवि एवं अभिनव प्रयास के सह सम्पादक अलीहसन मकरैंडिया को साहित्य में सराहनीय योगदान के लिए कासगंज, एटा (उ०प्र०) की साहित्यिक एवं सामाजिक संस्था 'संकल्प' की ओर से सम्मानित किया गया। गत दिनों संस्था द्वारा आयोजित कार्यक्रम में संस्था के संरक्षकों ने उन्हें माल्यार्पण, शॉल ओढ़ाकर, 'सम्मान-पत्र' एवं 3,100/-रुपये सम्मान राशि भेंटकर स्व० कवि जय मुरारीलाल सक्सेना स्मृति 'संकल्प गरिमा' अलंकरण से सम्मानित किया।

माधव पण्डित और बालशौरि रेड्डी पुरस्कृत

महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी ने मडगांव के माधव पण्डित को महाराष्ट्र भारती अखिल भारतीय हिन्दी सेवा पुरस्कार और चेन्नई के बालशौरि रेड्डी को राममनोहर त्रिपाठी अखिल भारतीय हिन्दी सेवा का एक लाख का पुरस्कार देने की घोषणा की है। राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी की उपाध्यक्ष फौजिया खान ने पुरस्कारों की घोषणा की। नवभारत टाइम्स के मुख्य संवाददाता विमल मिश्र को रिपोर्ताज श्रेणी में काका कालेलकर प्रथम पुरस्कार देने की घोषणा की गई है। उन्हें 35 हजार रुपए का पुरस्कार दिया जाएगा। इसके अलावा आठ लोगों को 51-51 हजार रुपए का राज्य स्तरीय पुरस्कार दिया गया है। इनमें वीणा मानचंद्र, फिरोज अशरफ, गोविंद दाभोलकर, द वि गुजर, कृष्णा पोतदार, साजिद रशीद, समीर पाण्डेय और एम०ए० कादर का नाम शामिल है। 51 हजार रुपए का राज्य स्वर्ण जयंती विशिष्ट सम्मान चंद्रशेखर धर्माधिकारी, पुष्पा भारती, नंदलाल पाठक, राजेन्द्र मेहता, त्रिभुवन राय, सुधाकर मिश्र, उमा शुक्ला, उषा ठक्कर, अमरनाथ पाटोले, शम्मी चौधरी, सत्यपाल सिंह, महेश तिवारी, कृष्णकुमार चौबे, महेश जोशी और वेदप्रकाश मिश्र को दिया गया है।

श्रीमती निर्मला बेहार एवं डॉ० रामकुमार बेहार सम्मानित

जैमिनी अकादमी पानीपत द्वारा अंचल के साहित्यकार श्रीमती निर्मला बेहार को साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों हेतु 'राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी सम्मान' से सम्मानित किया गया। शहीद भगत सिंह स्मारक पानीपत में जैमिनी अकादमी के एक गौरवपूर्ण समारोह में यह सम्मान कथा संग्रह 'अक्स जवाब माँग रहा था' के लिए पद्मश्री डॉ० विजय शाह द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर डॉ० रामकुमार बेहार को 'छत्तीसगढ़ रत्न' के सम्मान से अलंकृत किया गया।

'छूना है आकाश' पुरस्कृत

पंजाब नेशनल बैंक, प्रधान कार्यालय दिल्ली के, मौलिक लेखन पुस्तक योजना के अन्तर्गत अपने स्टाफ सदस्य लेखकों को हर वर्ष पुरस्कृत करता है। श्रीमती सविता चड्ढा को हिन्दी अकादमी के साहित्यिक कृति पुरस्कार के साथ देश की शीर्षस्थ संस्थाओं द्वारा महादेवी वर्मा सम्मान, कलम का सिपाही सम्मान, 'आराधक श्री सम्मान', 'मातृश्री सम्मान', 'ज्ञानी जैल सिंह सम्मान', 'माता सीता रानी सम्मान', 'सरस्वती सम्मान' के अलावा मैसूर प्रचार परिषद द्वारा 'हिन्दी सेवा सम्मान', आथर्स ऑफ इण्डिया द्वारा उनके लेखन के लिए पुरस्कार एवं सम्मान मिले हैं। इस वर्ष आपकी पुस्तक बाल कहानी संग्रह 'छूना है आकाश' को पंजाब नेशनल बैंक द्वारा पुरस्कृत / सम्मानित किया गया है। बैंक के कार्यकारी निदेशक श्री एम०बी० टांकसाले द्वारा आपको 10,000 रुपए नकद और सम्मान पत्र एक समारोह में प्रदान किया गया।

डॉ० सुशील सिद्धार्थ को 'अवध भारती सम्मान'

भारतीय ज्ञानपीठ के वरिष्ठ प्रकाशन अधिकारी, अवधी में दो काव्य-संग्रहों और एक उपन्यास की रचना करने वाले डॉ० सुशील सिद्धार्थ को अवधी का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार 'अवध भारती सम्मान' प्रदान किया गया। 14 मार्च को लखनऊ विश्वविद्यालय में आयोजित एक समारोह में डॉ० सूर्यप्रसाद दीक्षित एवं डॉ० रामबहादुर मिश्र ने यह सम्मान प्रदान किया। अवधी की मूर्धन्य संस्था 'अवध भारती समिति' की स्थापना के बीस वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में यह समारोह आयोजित था। सम्मान के अन्तर्गत डॉ० सिद्धार्थ को उत्तरीय, प्रशस्तिपत्र और ग्यारह हजार रुपये का चेक प्रदान किया गया। उन्होंने यह धनराशि अवधी के विकास हेतु संस्था को समर्पित कर दी।

प्रो० विजयराघव रेड्डी को जस्टिस शारदाचरण मित्र स्मृति भाषा सेतु सम्मान

'अपनी भाषा' संस्था अनुवाद कार्य द्वारा भारतीय भाषाओं के बीच सेतु निर्माण के लिए वर्ष 2001 से जस्टिस शारदा चरण मित्र स्मृति भाषा सेतु सम्मान प्रदान कर रही है। वर्ष 2010 के लिए यह सम्मान हिन्दी तथा तेलुगु के बीच अपने रचनात्मक अवदान तथा अनुवाद कार्य के माध्यम से भावात्मक एकता एवं सौमनस्य कायम करने के लिए श्री पोली विजयराघव रेड्डी को दिया गया। अस्वस्थता के कारण श्री रेड्डी की अनुपस्थिति में प्रो० सी० बर्द्धन कुमार ने सम्मान ग्रहण किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं वरिष्ठ आलोचक डॉ० श्री भगवान सिंह ने कहा कि भले ही हम राजनीतिक सन्दर्भ में स्वतंत्र हों, भाषिक रूप से हम अब भी पराधीन हैं। हिन्दी साम्राज्यवादी भाषा नहीं है। बोलियों का आन्दोलन हमारे एकत्व को खण्डित करने का उपक्रम है। इससे किसी का भला नहीं होगा। इसके पीछे हिन्दी की सामासिकता को खण्डित करने की चेष्टा है। इस सामासिकता की रक्षा के लिए हमें शहादत देनी होगी। बोलियों के लिए भाषा की रीढ़ तोड़ना गलत है।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्रीमती सरला माहेश्वरी ने कहा कि सांस्कृतिक विशुद्धता का दावा एक मिथक है। कोई भी संस्कृति मौलिकता का दावा नहीं कर सकती। भारतीय संस्कृति विभिन्न संस्कृतियों का संगम है जिसमें एकता के सूत्र के दर्शन होते हैं। इनके संरक्षण की आज जरूरत है। भारतीय भाषा परिषद्, कोलकाता के सभागार में आयोजित इस समारोह में काफी प्रबुद्धजन उपस्थित थे।

दिव्य पुरस्कार घोषित

शीर्ष ऐतिहासिक उपन्यासकार, कवि एवं चित्रकार स्व० अम्बिकाप्रसाद दिव्य की स्मृति में, साहित्य सदन, भोपाल द्वारा विगत 13 वर्षों से दिये जा रहे 'दिव्य पुरस्कारों' की घोषणा विगत 7 मार्च 2010 को की गयी। पुरस्कारों की घोषणा मुख्य अतिथि एवं खण्डवा के वन संरक्षक श्री शशि मलिक ने की। श्री शम्भू दत्त सती (वर्धा) को उपन्यास 'ओ इजा', डॉ० उषा अग्रवाल (कुरुक्षेत्र) को कथा-संग्रह 'सोने का पिंजड़ा' तथा श्री शैलेय (उद्यमसिंह नगर) को काव्य-संग्रह 'या' के लिए प्रतिष्ठित दिव्य पुरस्कार देने की घोषणा की गई। इसके अतिरिक्त श्री गदाधार नारायण (लखनऊ) को उपन्यास 'तारकनाथ', डॉ० नताशा (नोएडा) को 'बहुरंगी कहानियाँ', श्री किशन तिवारी (भोपाल) को 'मैं तुम हो जाऊँ', श्री मोहनचन्द्र त्रिपाठी (इटावा) को 'छूकर उजले पंख', डॉ० दिनेशकुमार शर्मा (कासगंज) को आलोचना 'मिथक और दिनकर', डॉ० स्वाती तिवारी (भोपाल) को निबन्ध-संग्रह 'अकेले होते लोग', डॉ० अंजु दुआ जैमिनी (फरीदाबाद) को निबन्ध-संग्रह 'मोर्चे पर स्त्री', डॉ० चन्द्रकान्त मेहता (अहमदाबाद) को निबन्ध संग्रह 'चलना हमारा काम है', श्री अमृतलाल मदान (कैथल) को नाटक 'माया मृग', श्री अनुज खरे (भोपाल) को व्यंग्य 'चिल्लर चिंतन', डॉ० राज गोस्वामी (दतिया) को लोकसाहित्य 'ओंछे वार ककई से', डॉ० जलज भादुड़ी (कोलकाता) को अनुवाद 'सुनील गंगोपाध्याय की कहानियाँ', श्री वेदप्रकाश कंवर (दिल्ली) को बाल-साहित्य 'दरवाजे खुल गये' एवं डॉ० भैंरूलाल गर्ग (भीलवाड़ा) को पत्रिका 'बाल वाटिका' के लिए अम्बिका प्रसाद दिव्य-रजत-अलंकरण प्रदान करने की घोषणा की गई। दिव्य पुरस्कारों के संयोजक एवं 'दिव्यालोक' पत्रिका के सम्पादक श्री जगदीश किंजल्क ने अपने स्वागत भाषण में बताया कि दिव्य पुरस्कारों के लिए साहित्य की अनेक विधाओं की 135 कृतियाँ प्राप्त हुई थीं। पुरस्कार घोषणा समारोह की अध्यक्षता नागालैण्ड के पूर्व राज्यपाल पद्मश्री ओ०एन० श्रीवास्तव ने की।

डॉ० शर्मा एवं श्री सोनी सम्मानों से विभूषित

मध्यप्रदेश लेखक संघ द्वारा भोपाल में आयोजित वर्ष 2009-10 के प्रतिष्ठित साहित्यकार सम्मान समारोह में सुधी समीक्षक एवं विक्रम विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० शैलेन्द्रकुमार शर्मा को 'डॉ० सन्तोषकुमार तिवारी समीक्षा सम्मान' तथा वरिष्ठ मालवी कवि श्री मोहन सोनी को 'हरीश निगम स्मृति मालवी सम्मान' से विभूषित किया गया। सम्मानस्वरूप अतिथियों द्वारा उन्हें सम्मान-पत्र, प्रतीक-चिह्न, सम्मान राशि एवं शॉल-श्रीफल अर्पित किए गए। समारोह के मुख्य अतिथि प्रख्यात साहित्यकार पद्मश्री प्रो० रमेशचंद्र शाह, भोपाल के संभागायुक्त डॉ० पुखराज मारू एवं विशिष्ट अतिथि इतिहासविद् डॉ० श्यामसुन्दर निगम के हाथों उन्हें सम्मानित किया गया।

श्री राजेन्द्र अरुण सम्मानित

17 अप्रैल को कोलकाता में श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा आयोजित इक्कीसवाँ 'डॉ० हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान' रामायण सेण्टर, मॉरीशस के निदेशक श्री राजेन्द्र अरुण को प्रदान किया गया। सम्मानस्वरूप उन्हें मानपत्र एवं 51 हजार रुपये का चेक प्रदान किया गया। समारोह के प्रधान अतिथि पूर्व केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री डॉ० मुरली मनोहर जोशी थे। मुख्य वक्ता इतिहासविद् तथा चिन्तक प्रो० देवेन्द्र स्वरूप थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने की।

भारतेन्दु पुरस्कार अर्पण समारोह सम्पन्न

29 मार्च को सूचना और प्रसारण मंत्री श्रीमती अम्बिका सोनी ने पत्रकारिता और जनसंचार विषयों पर हिन्दी में मौलिक लेखन को बढ़ावा देने के लिए भारतेन्दु पुरस्कार वर्ष 2007-08 के विजेताओं को सम्मानित किया। वर्ष 2007 के लिए पत्रकारिता एवं जनसंचार वर्ग में पहला पुरस्कार श्री विनीत मिश्र की पाण्डुलिपि 'वाणी-आकाशवाणी', दूसरा पुरस्कार डॉ० प्रकाश पुरोहित की पुस्तक 'राजस्थान में स्वतंत्रता संग्रामकालीन पत्रकारिता' और तीसरा पुरस्कार श्री नंद भारद्वाज की पुस्तक 'संस्कृति, जनसंचार और बाजार' को दिया गया। श्री विभाष कुमार झा की पुस्तक 'छत्तीसगढ़ में हिन्दी पत्रकारिता', श्री अपूर्व कुलश्रेष्ठ प्रसून की 'मेरी आवाज ही पहचान है—रेडियो', श्री गंगा सागर की 'सम्पादन आज और कल', श्री आलोक पुराणिक की 'आर्थिक पत्रकारिता' और श्री दुर्गेश त्रिपाठी की 'मजदूर और जनसंचार' को मानद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। महिला समस्या वर्ग में पहला पुरस्कार डॉ० छवि श्रीवास्तव की पाण्डुलिपि 'सूचना का अधिकार और महिला सशक्तीकरण', दूसरा पुरस्कार श्रीमती सरोज शर्मा की 'महिलाएँ और मानवाधिकार' को मिला। बाल साहित्य वर्ग में पहला पुरस्कार डॉ० रंचना अग्रवाल की पुस्तक 'विज्ञान में ताक-झाँक' और श्री सूर्यनाथ सिंह की पुस्तक 'बर्फ का आदमी' को संयुक्त रूप से दिया गया। राष्ट्रीय एकता वर्ग में डॉ० संध्या गुप्ता की पुस्तक '41 बाल कहानियों' को सम्मानित किया गया।

वर्ष 2008 के लिए पत्रकारिता एवं जनसंचार वर्ग में प्रथम पुरस्कार श्री देवेन्द्र उपाध्याय की पुस्तक 'भारतीय संसद और मीडिया' दूसरा पुरस्कार श्री वशिष्ठ नारायण की पुस्तक 'काशी में हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास', तीसरा पुरस्कार डॉ० कमल किशोर गोयनका की पुस्तक 'गाँधी : पत्रकारिता के प्रतिमान' को दिया गया। पाँच मानद पुरस्कार श्री मुक्तिनाथ की पुस्तक 'अन्तरराष्ट्रीय संचार और प्रमुख देशों की संचार व्यवस्था', श्री कालूराम पिरहार की पुस्तक 'मीडिया के सामाजिक सरोकार', श्री महाराज कृष्ण शाह व श्री अशोक जेलखानी की 'टेलीविजन कार्यक्रम निर्माण प्रक्रिया', श्री रमेशचंद्र त्रिपाठी की 'संचार सृजन' और सुश्री सोना सिंह की 'विकास, संचार अवधारणाएँ और प्रारूप' को दिए गए। महिला समस्या वर्ग में पहला पुरस्कार किसी को नहीं दिया गया। दूसरा पुरस्कार सुश्री अंजु दुआ की पुस्तक 'मोर्चे पर स्त्री' को दिया गया। बाल साहित्य वर्ग में पहला पुरस्कार सुश्री प्रज्ञा की 'तारा की अलवर यात्रा' तथा दूसरा पुरस्कार मो० साजिद खान की 'रहमत चाचा का घोड़ा' को दिया गया।

व्यंग्यश्री सूर्यकुमार पाण्डेय को

कोटा। ग्यारहवाँ व्यंग्यश्री मधुवन सम्मान इस वर्ष प्रसिद्ध कवि तथा स्तम्भकार सूर्यकुमार पाण्डेय को संस्था काव्य मधुवन द्वारा प्रदान किया गया। यह सम्मान प्रतिवर्ष व्यंग्य के क्षेत्र में काम करने वाले किसी एक राष्ट्र स्तरीय रचनाकार को उनके इस क्षेत्र में योगदान के लिए दिया जाता है।

'देवीशंकर अवस्थी स्मृति सम्मान' डॉ० प्रमिला केपी को

5 अप्रैल को दिल्ली में ललित कला अकादमी के कौस्तुभ सभागार में प्रसिद्ध लेखिका श्रीमती कृष्णा सोबती ने चौदहवाँ 'देवीशंकर अवस्थी स्मृति सम्मान' डॉ० प्रमिला केपी को प्रदान किया।

दक्षिण-एशियायी साहित्य-पुरस्कार

डी०एस०सी० लिमिटेड द्वारा आगामी जनवरी, 2011 में 50 हजार डॉलर के दक्षिण-एशियायी साहित्य-पुरस्कार की घोषणा सम्भावित है। इसके लिये डेविड गॉडविन, प्रो० मेघनाद देसाई, एम०जे० अकबर, नयनतारा सहगल, सुरैना नेरूला, सीनेथ वाल्टर परेरा, टीना ब्राऊन, ऊर्वशी बुरालिया और विलियम डैलरिम्पर की सदस्यता में एक समिति गठित की गयी है। पश्चिम के प्रतिष्ठित साहित्य-पुरस्कारों को दक्षिण एशिया की ओर केन्द्रित करने और नयी प्रतिभाओं को अवसर प्रदान करने के लिये इस पुरस्कार की प्रासंगिकता है। समग्र दक्षिण एशिया परिक्षेत्र की भाषा और साहित्य को पुरस्कृत करने का यह भारतीय प्रयास सिद्ध करता है कि वैश्वक-स्तर पर इस क्षेत्र का लेखन अपनी पहचान बना चुका है।

'हिमाचल केसरी' का 29वाँ वार्षिक समारोह सम्पन्न

31 मार्च को हिमाचल केसरी का 29वाँ वार्षिक समारोह धर्मशाला में सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि प्रदेश के जन स्वास्थ्य एवं सिंचाई मंत्री

श्री रविन्द्र सिंह रवि थे। 29 गण्यमान्य महानुभावों को उनके प्रशंसनीय कार्यों के लिए 'हिमाचल केसरी अवार्ड 2010' से सम्मानित किया गया। इसके अलावा 'पत्रकारिता सांत्वना पुरस्कार' सर्वश्री विकास बाबा (पंजाब केसरी), मनीष शर्मा (दैनिक जागरण), राजेश सूद (दिव्य हिमाचल), आशीष पटियाल (आपका फैसला), अजय सहगल (अजीत समाचार), नीलकांत (अमर उजाला), राकेश शर्मा (दैनिक भास्कर) और पत्रकार बविता विष्ट को दिया गया। 'हिन्दी पत्रकारिता पुरस्कार' 'पंजाब केसरी' के पत्रकार श्री अरविन्द शर्मा को और 'अंग्रेजी पत्रकारिता पुरस्कार' 'दि ट्रिब्यून' के ब्यूरो चीफ श्री ललित मोहन को प्रदान किया गया। 'साहित्य पुरस्कार' हि०प्र० स्कूल शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष श्री सी०एल० गुप्ता ने ग्रहण किया। 'श्रेष्ठ छायाकार पुरस्कार' श्री संजय वैद्य 'हिन्दुस्तान टाइम्स', 'इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पुरस्कार' श्री शिशु शांतल 'दूरदर्शन शिमला' को तथा 'पत्रकारिता सहयोग पुरस्कार' श्री लक्ष्मी नारायण 'मधुप' को मिला।

12वें आचार्य निरंजननाथ सम्मान हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

आचार्य निरंजननाथ स्मृति सेवा संस्थान के सहयोग से सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं राजस्थान साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष आचार्य निरंजननाथ की स्मृति में साहित्यिक पत्रिका 'सम्बोधन' द्वारा प्रति वर्ष दिया जाने वाला सम्मान इस वर्ष 'हास्य-व्यंग्य' विधा पर दिया जाएगा।

पुरस्कृत रचनाकार को पच्चीस हजार रुपये नकद, शाल, स्मृति चिह्न एवं प्रशस्ति-पत्र भेंट किया जाएगा।

इस 12वें अखिल भारतीय पुरस्कार हेतु गत पाँच वर्षों (2005-2009) में प्रकाशित 'हास्य-व्यंग्य' पुस्तक की तीन प्रतियाँ 31 अगस्त 2010 तक लेखक, प्रकाशक या कोई भी शुभ चिंतक इस पते पर भेज सकते हैं—**कमर मेवाड़ी**, संयोजक, आचार्य सम्मान-2010, सम्बोधन, कांकरोली-313324, जिला-राजसमन्द, (राजस्थान)

अम्बिकाप्रसाद दिव्य स्मृति प्रतिष्ठा पुरस्कारों हेतु प्रवृष्टियाँ आमंत्रित

स्व० अम्बिकाप्रसाद 'दिव्य' की स्मृति में साहित्य सदन, भोपाल द्वारा पुरस्कारों हेतु पुस्तकें आमंत्रित हैं। पुस्तकें जनवरी 2007 से दिसम्बर 2009 के मध्य प्रकाशित होनी चाहिए। पुस्तकों की दो प्रतियाँ, प्रत्येक प्रविष्टि के साथ सौ रुपये प्रवेश शुल्क, लेखक, सम्पादक के दो रंगीन चित्र एवं परिचय 30 नवम्बर, 2010 तक श्रीमती राजो किंजल्क, साहित्य सदन, प्लाट नं० 145-ए, साईंनाथ नगर 'सी' सेक्टर, कोलार, भोपाल-462042 के पते पर भेजें।

स्मृति-शेष

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ० राजदेव मिश्र का निधन

फैजाबाद। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ० राजदेव मिश्र का 12 अप्रैल को देर रात निधन हो गया। डॉ० मिश्र की आयु 82 वर्ष थी। डॉ० मिश्र संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। पिछले वर्ष उन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार भी मिला था। अयोध्या के प्रसिद्ध रामायण मेले में प्रकाशित होने वाली पत्रिका तुलसीदल का डॉ० मिश्र लम्बे समय से सम्पादन करते रहे।

मैनेजमेंट गुरु सी०के० प्रह्लाद का निधन

वाशिंगटन। दुनिया भर में मशहूर मैनेजमेंट गुरु सी०के० प्रह्लाद का अमेरिका के सेन डिएगो के एक अस्पताल में निधन हो गया।

कोयंबटूर में जन्मे प्रह्लाद ने मद्रास (अब चेन्नई) के लोयोला कॉलेज से विज्ञान में स्नातक और अहमदाबाद में भारतीय प्रबन्ध संस्थान से एम०बी०ए० की उपाधि हासिल की। वह मिशिगन यूनिवर्सिटी के रॉस बिजनेस स्कूल में व्यावसायिक रणनीति विषय के प्राध्यापक थे। हाल में उनकी पुस्तक 'फार्च्यून एट द बाटम ऑफ द पिरामिड : एराडिकेटिंग पावर्टी थ्रू प्राफिट' बेहद चर्चा में रही। प्रह्लाद कई कम्पनियों के निदेशक मण्डल में भी रहे।

साहित्यकार डॉ० विजय बलियाटिक नहीं रहे

कवि, लेखक, व्यंग्यकार तथा महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ में हिन्दी विभाग के पूर्व प्रोफेसर डॉ० विजय नारायण सिंह 'विजय बलियाटिक' का उनके पैतृक गाँव मुंडेरा (बलिया) में 21 फरवरी 2010 ई० को हृदयाघात से निधन हो गया। वे 80 वर्ष के थे। वे अत्यन्त जुझारू तेवर के साहित्यकार थे। भोजपुरी भाषा के प्रति उनमें गहरा लगाव था।

कवि-कथाकार सन्तोख सिंह धीर का निधन

सुपरिचित कवि-कथाकार सन्तोख सिंह धीर हमारे बीच नहीं रहे। विभिन्न विधाओं में लगभग पचास किताबों के रचयिता श्री धीर महत्त्वपूर्ण लेखक रहे हैं। अभी हाल ही में उनका उपन्यास 'नया जन्म' ज्ञानपीठ से प्रकाशित हुआ है।

'यकम' नहीं रहे

जालंधर। योगेश कुमार मरवाहा 'यकम' का हृदय गति रुक जाने के कारण विगत दिनों निधन हो गया। अपनी तीखी आलोचना के लिए चर्चाओं में रहने वाले श्री यकम पिछले लम्बे समय से बीमार चल रहे थे। श्री यकम 1971 से निरन्तर हिन्दी व पंजाबी दोनों ही भाषाओं में साहित्य साधना कर रहे थे। सहयोगी संकलन 'खुला आकाश', लघु पत्रिका 'ग्रास' व पाक्षिक 'जनश्री' के सहयोगी सम्पादक के तौर पर भी उन्होंने पर्याप्त ख्याति प्राप्त की। 2005 में उनका स्वतन्त्र कविता संग्रह 'स्थिति नियन्त्रण में है' प्रसिद्धि की बुलन्दियों को छू गया जिसको पंजाब सरकार ने श्रीसंत सिंह पुरस्कार से सम्मानित किया।

जनकवि अर्जुनलाल कवि का निधन

पिछले दिनों जनकवि अर्जुनलाल कवि का निधन हो गया। वे कबीर की परम्परा के कवि थे। उन्होंने समाज की विसंगतियों के साथ ही साथ धार्मिक कट्टरवाद पर तीखे वार किये। उनकी शिक्षा मात्र चौथी कक्षा तक रही लेकिन उन्होंने अपने दोहों में जो सन्देश दिए हैं वे समाज को शिक्षित करने के लिए याद किए जाएँगे।

क्या कुरबानी देश को, देत मंत्री आज।
भोली चिड़ियों के लिए, झपट रहे ज्यों बाज॥

वरिष्ठ पत्रकार श्री विष्णुदत्त शर्मा का निधन

19 मार्च को वरिष्ठ पत्रकार श्री विष्णुदत्त शर्मा का निधन हो गया। 54 वर्षीय श्री शर्मा लम्बे समय से मधुमेह और लीवर की बीमारी से पीड़ित थे। अन्तिम संस्कार में मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के अलावा बड़ी संख्या में पत्रकार व गणमान्य जन उपस्थित थे।

साहित्यकार श्रीमाली का निधन

30 मार्च को जाने-माने साहित्यकार श्री रामेश्वरदयाल श्रीमाली का निधन हो गया। वे 76 वर्ष के थे। उनकी एक दर्जन से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। 'गुनहगार गजल' के लिए वर्ष 1996 में उन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

वरिष्ठ शायर डॉ० जगतार नहीं रहे

30 मार्च को पंजाबी के वरिष्ठ शायद डॉ० जगतार का निधन हो गया। 75 वर्ष के डॉ० जगतार लम्बे समय से बीमारी से पीड़ित थे। डॉ० जगतार ने करीब 17 कविता-संग्रह लिखे, साथ ही कई पुस्तकों का उर्दू-फारसी से अनुवाद किया। उन्होंने सूफी दरवेशों की शायरी का सम्पादन भी किया।

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० अर्जुन शतपथी

18 जनवरी को हिन्दी साहित्य-जगत में विख्यात साहित्यकार डॉ० अर्जुन शतपथी का देहावसान हो गया। वे 74 वर्ष के थे। उनकी मौलिक कृतियों में कहानी-संग्रह 'सृजन-सुख' तथा अन्य कहानियाँ 'एक विवश शाम' (उपन्यास) 'पटती हुई खाई', 'सत्यपुत्र', 'पाषण के थिरकते चरण' आदि तथा वीर सुरेन्द्र साय पर आधारित उनका उपन्यास 'अग्निपुत्र' (ओड़िया) बहुचर्चित है। अनूदित कृतियों में 'दीपदान', 'उड़िया की श्रेष्ठ कहानियाँ' आदि प्रमुख हैं। उन्हें हिन्दीतर भाषी लेखक पुरस्कार सौहार्द सम्मान, साहित्य महोपाध्याय, सहस्राब्दी सम्मान आदि अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

संगोष्ठी/लोकार्पण

गुरु गोविन्द सिंह पर पुस्तक का लोकार्पण

अखिल भारतीय साहित्य परिषद से सम्बद्ध इन्द्रप्रस्थ साहित्य भारती के तत्वावधान में जीतसिंह जीत की शोधपरक पुस्तक 'गुरु गोविन्द सिंह के काव्य में संस्कृति और राष्ट्रीयता' का लोकार्पण हिन्दी भवन, नई दिल्ली में 3 अप्रैल, 2010 को श्री कुप्० सी० सुदर्शन (निवर्तमान सरसंघचालक) ने किया।

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान में आन्तरिक हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून के राजभाषा अनुभाग द्वारा आयोजित आन्तरिक हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठियों के क्रम में '28वीं आन्तरिक हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठी' का उद्घाटन करते हुए संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ० अरुणाभ दत्ता ने राजभाषा अनुभाग की संगोष्ठियों की इस शृंखला की सराहना करते हुए कहा कि निश्चित रूप से इस प्रकार की संगोष्ठियाँ विज्ञान के प्रसार एवं प्रचार में अत्यन्त सहायक हैं। हमें अपनी भाषा में विज्ञान के अनुसंधान कर अपना ज्ञानवर्धन करना चाहिए। हम केवल विदेशी अनुसंधान को ही उद्धृत न करें बल्कि अपनी मौलिकता का परिचय देकर ही विज्ञान को नई दिशा दें।

संगोष्ठी का संचालन करते हुए संस्थान के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी एवं संयोजक डॉ० दिनेश चमोला ने कहा कि विज्ञान के अनुसंधानों को राजभाषा हिन्दी के माध्यम से अभिव्यक्त करना निश्चित रूप से राष्ट्रीय महत्त्व का कार्य है।

'आधुनिक भारत में पिछड़ा वर्ग' का लोकार्पण

पिछले दिनों साहित्य अकादमी सभागार नई दिल्ली में रमणिका फाउंडेशन तथा शिल्पायन के तत्वावधान में संजीव खुदशाह द्वारा लिखित पुस्तक 'आधुनिक भारत में पिछड़ा वर्ग' का लोकार्पण समारोह आयोजित किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि 'हंस' पत्रिका के सम्पादक श्री राजेन्द्र यादव थे।

भारतीय कवियों के प्रिय नायक हैं कृष्ण!

चेन्नई की प्रसिद्ध संस्था साहित्यानुशीलन समिति की ओर से रविवार, 4 अप्रैल 2010 को कृष्ण-केन्द्रित काव्य-साहित्य पर एक संगोष्ठी का आयोजन हुआ। समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ हिन्दी विद्वान् डॉ० एम० शेषन ने की और भाषा-संगम (प्रयाग) के महासचिव डॉ० एम० गोविन्दराजन विशिष्ट अतिथि थे। समिति के अध्यक्ष डॉ० इंदरराज बैद ने कहा कि कि श्रीकृष्ण केवल पौराणिक और ऐतिहासिक नायक ही नहीं, सम्पूर्ण भारत के काव्यनायक के रूप में भी प्रतिष्ठित हैं। संगोष्ठी में डॉ० एम० गोविन्दराजन ने सुब्रह्मण्य भारती के कृष्ण पर, डॉ० एम० शेषन ने 'वेंकट सुब्बय्यर के कृष्ण' पर, डॉ० इंदरराज बैद ने 'मीराबाई के कष्ण' पर, डॉ० अशोक कुमार द्विवेदी ने 'तुलसीदास के कृष्ण' पर, डॉ० वासुदेवन शेष ने 'नंददास के कृष्ण' पर, डॉ० विद्या शर्मा ने 'नज़ीर के कृष्ण' पर और श्री रमेश गुप्त नीरद ने 'आधुनिक सन्दर्भ में कृष्ण' विषय पर अनुशीलनात्मक आलेख प्रस्तुत किये।

'काले पृष्ठों पर उकरे शब्द' का लोकार्पण

साहित्यिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक मंच 'जनश्री—एक प्रयास', जालन्धर के तत्त्वावधान में वरिष्ठ बहुआयामी आवेगधर्मी जनवादी कवि प्रो० मोहन सपरा के सद्य प्रकाशित 5वें कविता संग्रह 'काले पृष्ठों पर उकरे शब्द' के लोकार्पण एवं विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।

विश्वम्भर नाथ चतुर्वेदी स्मृति समारोह

मथुरा में हिन्दी व संस्कृत के यशस्वी विद्वान विश्वम्भर नाथ चतुर्वेदी 'शास्त्री' की स्मृति में गत 8 वर्षों से निरन्तर जारी स्मृति-समारोह में 'यह दौर और कविता' विषय पर परिचर्चा, जनकवि महेन्द्र नेह के कविता संग्रह 'थिरक उठेगी धरती' का लोकार्पण, साहित्यिक अंताक्षरी की प्रस्तुतियाँ तथा कविता पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन सम्पन्न हुआ।

आर०के० भगत का काव्य संग्रह लोकार्पित

चण्डीगढ़ में साहित्य संस्था 'मंथन' के सौजन्य से रंधावा ऑडिटोरियम, पंजाब कला भवन, सैक्टर-16, चण्डीगढ़ में कवि आर०के० भगत के काव्य-संग्रह 'तुमने कहा कुछ मैंने कहा' का लोकार्पण समारोह सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ० रमेश कुंतल मेघ की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि के तौर पर श्रीमती उर्मि कृष्ण, कथाकार व सम्पादक—'शुभ तारिका', अंबाला, विराजमान रहीं।

काव्य-कृतियों का लोकार्पण

महानगर की साहित्यिक संस्थाओं—विप्रा कला साहित्य मंच, परमार्थ, अक्षरा के संयुक्त तत्वावधान में लोकार्पण समारोह सम्पन्न हुआ जिसमें मुरादाबाद के वरिष्ठ साहित्यकार श्री शचीन्द्र भटनागर की दो काव्य-कृतियों 'ढाई आखर प्रेम के' (गीत संग्रह) तथा 'अखण्डित अस्मिता' (मुक्तक संग्रह) का लोकार्पण हुआ।

राष्ट्रीय रामायण मेला सम्पन्न

37वें राष्ट्रीय रामायण मेला चित्रकूट में ''आधुनिक सन्दर्भ में रामायण की प्रासंगिकता'' विषय के अनुसार मानस में स्त्री व दलित विमर्श के सन्दर्भ में डॉ० विनय पाठक ने निर्दिष्ट किया कि तत्कालीन समय के प्रचलित व्याकरण को दृष्टिगत रखकर ही विवेचना की जा सकती है तथा यह सर्वमान्य तथ्य है कि मानस में प्रत्येक वर्ग के लिए सौहार्द्र की कामना की गई है। डॉ० बृजेश सिंह ने निर्दिष्ट किया कि निराकार व साकार उपासना के द्वंद्व ने धर्म क्षेत्र का अत्यधिक नुकसान किया है। तुलसीदास की विचारधारा सम्पूर्ण अध्यात्म का प्रतिनिधित्व करती है तथा मानस में समस्त मानवीय समस्याओं का समुचित समाधान है। ज्ञातव्य हो कि राष्ट्रीय रामायण मेले के स्थापना डॉ० राममनोहर लोहिया समाजवादी विचारक ने 37 वर्ष पूर्व की थी।

पत्रिका 'रंग संवाद' लोकार्पित

सांस्कृतिक विमर्श पर आधारित हिन्दी पत्रिकाओं के परिवार में एक और नई पत्रिका 'रंग संवाद' का पदार्पण सांस्कृतिक राजधानी भोपाल में हुआ है। प्रदर्शनकारी कलाओं और साहित्य के अन्तर्सम्बन्धों पर एकाग्र विमर्श को प्रोत्साहित करने की मंशा से शुरू हुए वनमाली सृजन पीठ के इस प्रकाशन का प्रवेशांक बहु कला केन्द्र भारत भवन में आयोजित गरिमापूर्ण समारोह में हुआ। इस मौके पर अन्तर्राष्ट्रीय कोरियोग्राफर तथा रंगमंच की स्थापित कलाकार पद्मश्री गुलवर्धन और रंग संवाद के प्रधान सम्पादक, सुप्रसिद्ध कवि-उपन्यासकार और संस्कृतिकर्मी श्री सन्तोष चौबे तथा स्व० हबीब तनवीर की रंगकर्मी बेटी सुश्री नगीन तनवीर खासतौर पर मौजूद थे। कला समीक्षक विनय उपाध्याय तथा रंगकर्मी राकेश सेठी भी इस मौके पर उपस्थित थे।

नए वक्त का स्त्री विमर्श : 'किरदार जिन्दा है' का लोकार्पण

''हिन्दी आलोचना दोगली हो गई है। प्रपंचकारी उसकी आँख 'शत्रुलोचन' 'मित्रलोचन' से ग्रस्त है। इस पूर्वाग्रही परिवेश में 'किरदार जिन्दा है' जैसा नया विमर्श पैदा करती किताब का स्वागत किया जाना चाहिए।'' हिन्दी की शीर्ष कथाकार ममता कालिया इस बेबाकी के साथ भोपाल के साहित्य परिसर में चर्चित लेखिका रेखा कस्तवार की हाल में छपकर आई पुस्तक 'किरदार जिन्दा है' के लोकार्पण प्रसंग पर अपना वक्तव्य दे रही थीं। लोकार्पित कृति में शामिल स्त्री पात्र पूरी तार्किकता से हमारे समय का जरूरी विमर्श करते हैं।

'लोग शरमाना भूल गए हैं' का लोकार्पण

वाराणसी। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कलासंकाय के राधाकृष्णन सभागार में हिन्दी विभाग के प्रोफेसर एवं साहित्यकार बलराज पाण्डेय के कविता संग्रह 'लोग शरमाना भूल गए हैं' का लोकार्पण मुख्य अतिथि प्रो० मैनेजर पाण्डेय ने किया। उन्होंने कहा कि मौजूदा दौर में शर्म के अभाव को याद दिलाना मानवीय कर्त्तव्य है। अध्यक्षीय सम्बोधन में कथाकार काशीनाथ सिंह ने कहा कि प्रो० पाण्डेय की कविताओं में नागार्जुन का प्रभाव अधिक दिखाई पड़ता है। विशिष्ट अतिथि कवि ज्ञानेन्द्रपति ने कहा कि प्रो० पाण्डेय की कविताओं में आत्मावलोकन की चेष्टा

है। वर्णों-मात्राओं की गिनती के फेर में पड़े बगैर ये छन्दों का पुनरावेषण करते हैं। प्रो० चौथीराम यादव ने कहा कि इन कविताओं में सत्ता प्रतिष्ठान के विरुद्ध स्वर मुखर हुआ है। संचालन डॉ० विनय कुमार सिंह, स्वागत व धन्यवाद ज्ञापन प्रो० राधेश्याम दुबे ने किया।

आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी स्मरण प्रसंग

आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी एक निस्पृह व्यक्तित्व थे। उन्होंने भारतीय चिन्तन को गहराई से आत्मसात् किया था। वे एक समन्वयवादी आचार्य थे। उन्होंने परम्परा और नवीनता के श्रेष्ठ तत्त्वों को सदैव अंगीकार करने पर बल दिया।

ये उद्‌गार मध्यप्रदेश के पुलिस महानिरीक्षक डॉ० पन्नालाल (इन्दौर) ने विक्रम विश्वविद्यालय की हिन्दी अध्ययनशाला में आयोजित आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी स्मरण प्रसंग में व्यक्त किये।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विक्रम विश्वविद्यालय के कार्यवाहक कुलपति प्रो० केदारनारायण जोशी ने कहा कि आचार्य त्रिपाठी उदारमना और सहज व्यक्तित्व के धनी थे। वे कहीं से भी रूढ़िवादी नहीं थे। संस्कृत का ऐसा कोई शास्त्र नहीं था, जिसे उन्होंने आत्मसात् नहीं किया हो। इसके बावजूद वे आधुनिक काव्य से भी गहरे सम्पृक्त थे। वे सदैव सेतु के रूप में रहे।

साहित्य का सच तभी पूरा होता है जब उसमें पाठक का सच जुड़ जाये : अशोक वाजपेयी

साहित्य का काम आज के दौर में बहुलता को बनाये रखना है। साहित्य का काम अपने समय के सच को कहना और सच पर सन्देह करना है। अध्यात्म के पुनर्वास का काम साहित्य करता है। साहित्य का सच्चा नैतिक कर्म है—प्रश्न करना और हिंसा को तोड़ना। साहित्य का सच तभी पूरा होता है जब उसमें पाठक का सच जुड़ जाये। गाँधीजी ने सबसे पहले पुरजोर ढंग से पश्चिम की रेडिकल आलोचना की थी। अध्यात्म, भाषा और ईश्वर मनुष्य के अद्‌भुत आविष्कार हैं। यह बहुत हिंसक शताब्दी है। सारे समुदाय हिंसक हो गए हैं। ऐसे में साहित्य की भूमिका प्रासंगिक हो गयी है।

ये उद्‌गार प्रख्यात कवि-आलोचक श्री अशोक वाजपेयी (नई दिल्ली) ने विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन की हिन्दी अध्ययनशाला एवं गाँधी अध्ययन केन्द्र द्वारा आयोजित व्याख्यान एवं सम्मान समारोह में व्यक्त किये। वे 'हमारे समय की चुनौतियाँ और साहित्य' विषय पर व्याख्यान दे रहे थे।

प्रारम्भ में प्रास्ताविक वक्तव्य देते हुए हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० शैलेन्द्रकुमार शर्मा ने कहा कि श्री अशोक वाजपेयी भारत के विविधवर्णी सौन्दर्य के विलक्षण व्याख्याकार हैं। उन्होंने आजादी के बाद नये सांस्कृतिक पुनर्जागरण में अविस्मरणीय योगदान दिया है।

इस अवसर पर गाँधी अध्ययन केन्द्र के निदेशक प्रो० गोपालकृष्ण शर्मा, हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० शैलेन्द्रकुमार शर्मा, डॉ० गीता नायक, प्रो० हरीश प्रधान एवं श्री शरद शर्मा ने शॉल-श्रीफल एवं स्मृति-चिह्न अर्पित कर श्री वाजपेयी का सम्मान किया। कार्यक्रम में चित्रकार श्री अक्षय आमेरिया के मोनोग्राफ 'साथ' का विमोचन श्री वाजपेयी ने किया।

'लोक संस्कृति के विविध आयाम' पर संगोष्ठी का आयोजन

लोक साहित्य अनुभव पर आधारित होता है। एक बार शास्त्र गलत हो सकता है, लोक साहित्य नहीं। कर्नाटक के अनेक लोक-कवियों ने जटिल दार्शनिक और आध्यात्मिक चिन्तन को सरल रूप में लोक भाषा के माध्यम से असंख्य जनसमुदाय तक पहुँचाया है। यक्षगान लोक और शास्त्र के समन्वय का अनूठा उदाहरण है।

उक्त उद्‌गार वरिष्ठ समीक्षक, लोकसंस्कृति के मनीषी और 'वसब मार्ग' के सम्पादक डॉ० टी०जी० प्रभाशंकर प्रेमी (बेंगलूरु) ने हिन्दी अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय में 'लोक संस्कृति के विविध आयाम' विषय पर एकाग्र संगोष्ठी में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि लोक भाषाओं में निबद्ध साहित्य भारत की सम्पत्ति है। राजनीतिक दृष्टि से भाषाओं और बोलियों के बीच दीवार खड़ी करना उचित नहीं है। समग्र भारतीय लोक-साहित्य की अवधारणा पर काम होना चाहिए।

देश के विख्यात लोक संस्कृतिवेत्ता डॉ० महेन्द्र भानावत (उदयपुर) ने कहा कि लोक संस्कृति के शोधार्थी को पूर्वनिर्धारित मान्यताओं और ज्ञान को एक ओर रखकर ही तथा बिना किसी पूर्वाग्रह के अपने शोधकार्य को करना चाहिए। लोक-साहित्य में प्रयुक्त शब्दावली में गम्भीर और मूल्यवान अर्थ छिपा रहता है। इतिहास के अनेक अज्ञात तथ्य लोक-साहित्य में मिलते हैं। लोक-संस्कृति का इतिहास अभी तक नहीं लिखा गया है।

आत्मकथा 'इतिशेष' का लोकार्पण

दिनांक 9 अप्रैल 2010 को भारतीय अनुवाद परिषद के सभागार में राजधानी के जाने-माने साहित्यकारों, शिक्षाविदों एवं शब्दावली विशेषज्ञों की उपस्थिति में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त साहित्य मनीषी श्री हिमांशु जोशी और लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार श्रीमती चित्रा मुद्‌गल ने दक्षिण भारतीय विद्वान नीलकंठन नंपूतिरी द्वारा विरचित आत्मकथा 'इतिशेष' का लोकार्पण किया।

पुस्तक का स्वागत करते हुए डॉ० चित्रा मुद्‌गल ने कहा—''इसमें स्वतंत्रता-पूर्व के दिनों की केरल की सामाजिक स्थिति, सार्वजनिक सड़क पर चलने के अधिकार के लिए कमजोर वर्गों के संघर्ष, निम्नवर्ग के लोगों के मन्दिर प्रवेश हेतु बापूजी के नेतृत्व में वैकम सत्याग्रह, दक्षिण में हिन्दी आन्दोलन आदि ऐतिहासिक घटनाओं का इतिवृत्त एक आम आदमी के नजरिए से दर्ज है। नंपूतिरी समाज के कठोर नियमों के चलते लेखक को औपचारिक शिक्षा पाने के लिए जो संघर्ष करना पड़ा, जीवनभर उल्टी धारा से जूझते हुए उन्होंने जो सफलता पाई है और मिसाल कायम की है, इसके मद्देनजर मैं सिफारिश करना चाहती हूँ कि यह आत्मकथा स्कूल में बच्चों को पढ़ाई जानी चाहिए।''

अपने अध्यक्षीय भाषण में हिमांशु जोशी ने यह उद्‌गार व्यक्त किया कि आत्मकथा लिखने के लिए व्यक्ति के अन्दर अतिशय साहस होना चाहिए, यही वजह है कि हिन्दी के अनेक साहित्यकार आत्मकथा लिखने से रह गए। नंपूतिरीजी की आत्मकथा में अथ से इति तक जो ऋजुता, सहज-सरलता और सच्चाई है वह सम्मोहित करने वाली है।

मालवी को नया प्रकाश मिल रहा है उज्जैन में — श्री पटेल

उज्जैन। मालवी काव्य-सृजन और लोक-संस्कृति के क्षेत्र में बहुत कार्य हो रहा है। आज उज्जैन में मालवी को नया प्रकाश मिल रहा है। उज्जैन मालवी का एक महत्त्वपूर्ण खूँट है। मालवी को गद्य-लेखन की दिशा में भी आगे आना होगा।

ये उद्‌गार मालव लोक-संस्कृति प्रतिष्ठान एवं सालाना पत्रिका 'जगर मगर' के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित समकालीन मालवी कविता पर केन्द्रित चर्चा गोष्ठी के प्रमुख अतिथि वरिष्ठ कवि श्री नरहरि पटेल ने व्यक्त किए।

वरिष्ठ विद्वान डॉ० भगवतीलाल राजपुरोहित ने कहा कि मालवी का लोक-प्रवाह शताब्दियों से जारी है, यह आगे भी जारी रहेगा।

विक्रम विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० शैलेन्द्रकुमार शर्मा ने कहा कि मालवी कविता हमारी समृद्ध विरासत और समकालीन जीवन को समन्वित करने का महत्त्वपूर्ण प्रयास कर रही है।

'एनसाइक्लोपीडिया ऑफ हिन्दुइज्म'

3 अप्रैल को हरिद्वार के उदासीन कासणी आश्रम शिविर, भोपतवाला में विश्व हिन्दू शब्दकोश 'एनसाइक्लोपीडिया ऑफ हिन्दुइज्म' का विमोचन तिब्बती धर्म गुरु दलाई लामा, पूर्व उप-प्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी, योगगुरु स्वामी रामदेव तथा अनेक संत-महंतों की उपस्थिति में किया गया। इस अवसर पर राज्यसभा की पूर्व उपाध्यक्ष श्रीमती नजमा हेपतुल्ला, श्रीमती कमला आडवाणी, उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' तथा भजन सम्राट श्री अनूप जलोटा उपस्थित थे। यह ज्ञानकोश परमार्थ निकेतन के परमाध्यक्ष चिदानंद

मुनि ने 11 खण्डों में तैयार कराया है। इसके सात खण्डों का विमोचन किया गया।

'कृष्ण गीता संगीत के झरोखों से' का लोकार्पण

विगत दिनों श्री विनोद मल्होत्रा की पुस्तक 'कृष्ण गीता संगीत के झरोखों से' का लोकार्पण भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् के अध्यक्ष डॉ० कर्ण सिंह ने किया। पुस्तक के साथ गीता के विभिन्न श्लोकों को विभिन्न रागों के जरिए सम्मिलित किया गया है।

'नागार्जुन का साहित्य : विविध आयाम' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड (कर्नाटक राज्य) के हिन्दी विभाग के तत्वावधान में भारत में सर्वप्रथम नागार्जुन की जन्मशती के अवसरपर 'नागार्जुन का साहित्य : विविध आयाम' विषय पर 29-30 मार्च 2010 को द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई।

सरदार पटेल विश्वविद्यालय, गुजरात के डॉ० शिवकुमार मिश्रजी ने अपने उद्‌घाटन-भाषण में सर्वप्रथम भारत देश में नागार्जुन जी की जन्मशती के अवसर पर आयोजित इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए प्रशंसा करते हुए कहा कि नागार्जुन ने बचपन से लेकर अपने अन्तिम दिनों तक कई कठिनाईयों का सामना करते हुए, एक स्वाभिमानी होकर निर्भीक जीवन जिया। नागार्जुन के साहित्य में सामाजिक जीवन-साधारण-असाधारण स्थितियाँ, समानता, राजनीतिक जीवन आदि विषय सम्मिलित हैं। उद्‌घाटन सत्र में गोवा विश्वविद्यालय के हिन्दी प्राध्यापक डॉ० रोहिताश्वजी ने कहा कि—नागार्जुन का साहित्य संस्कृत, हिन्दी, मैथिली भाषाओं का संगम है। उन्होंने साहित्य के विविध प्रकारों में जैसे कहानी, उपन्यास, काव्य, निबन्ध आदि की अत्यन्त सुन्दर रचना की है। कर्नाटक विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ० सुमंगला मुम्मिगट्टी जी ने अपने प्रास्ताविक भाषण में नागार्जुन के साहित्य के अध्ययन की प्रासंगिकता और अन्य पहलुओं पर प्रकाश डाला।

दूसरे दिन की संगोष्ठी, 'नागार्जुन के कथा साहित्य तथा अन्य साहित्य' विषय पर केन्द्रित रही।

पुस्तक-प्रेरित साहित्य-महोत्सव

पिछले महीने चीन की राजधानी बीजिंग में पुस्तक-प्रेरित साहित्य-महोत्सव सम्पन्न हुआ। 5-19 मार्च तक चले इस महोत्सव में चीन के राष्ट्रीय लेखकों के साथ ही एशिया और अन्तर्राष्ट्रीय-स्तर के लगभग 70 लेखकों ने शिरकत की। पुस्तक-प्रेरित नवीन अवधारणाओं एवं कार्यक्रमों के अन्तर्गत पुस्तक-परिचर्चा, लेखन कार्यशाला, लेखक से मुलाकात और आत्मीय-संवाद आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

भोजपुरी विषयक संगोष्ठी

वाराणसी। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में भोजपुरी अध्ययन केन्द्र की ओर से 'भोजपुरी का भविष्य' विषयक संगोष्ठी को बतौर मुख्य वक्ता सम्बोधित करते हुए हिन्दी के वरिष्ठ कवि प्रो० केदारनाथ सिंह ने विचार व्यक्त किया कि भोजपुरी मेरा घर है और हिन्दी मेरा देश। घर और देश में कोई विरोध नहीं होता। दोनों को परस्पर सहयोग से विकसित होते रहना चाहिए। भोजपुरी को विचार की भाषा बनाने के लिए जरूरी है कि इसमें अधिक से अधिक गद्य लिखा जाए। रही बात, भोजपुरी प्रदेश के माँग की तो यह अव्यवहारिक है।

उन्होंने कहा कि भोजपुरी एक समृद्ध भाषा है। यह अपील करती है। कालिदास के मेघदूतम और रवीन्द्रनाथ टैगोर के गीतांजलि का भोजपुरी अनुवाद मूल पुस्तक के काफी निकट है। उन्होंने आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का संस्मरण सुनाते हुए कहा कि उन्हें एक भोजपुरी सम्मेलन में बोलने का आमंत्रण मिला। पहले तो काफी झिझके लेकिन बोलना शुरू किया तो कहीं अटके नहीं। उन्होंने कहा कि फणीश्वरनाथ रेणु की 'पंचलाइट' जब भोजपुरी में मंचित हुई तो काफी लोकप्रिय हुई। संगोष्ठी की अध्यक्षता रेक्टर प्रो० बीडी सिंह ने की। केन्द्र के समन्वयक प्रो० सदानंद शाही ने कहा कि भोजपुरी के आगे बढ़ने से हिन्दी भी समृद्ध होगी। धन्यवाद ज्ञापन हिन्दी के विभागाध्यक्ष प्रो० राधेश्याम दूबे ने किया। इस दौरान प्रो० दीपक मलिक, प्रो० शुभा राव, प्रो० बलराज पाण्डेय, प्रकाश उदय, प्रो० सत्यदेव त्रिपाठी, प्रो० वाचस्पति, डॉ० कृष्णमोहन, प्रो० महेन्द्रनाथ राय, डॉ० आशीष त्रिपाठी, किरण सिंह, डॉ० श्रीप्रकाश शुक्ल, डॉ० रामाज्ञा राय आदि मौजूद थे।

अध्येताओं, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक

(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)

वाराणसी - 221 001 (उ०प्र०)

Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082

E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com

Website : www.vvpbooks.com

पाठकों के पत्र

'भारतीय वाङ्मय' पत्रिका को अगर हिन्दी साहित्य कोश कहा जाये तो अतिशयोक्ति न होगी। हर अंक किसी विपुल भण्डार की तरह होता है। इतनी ढेर सारी जरूरी जानकारी अन्य कहीं नहीं मिलती है, जितनी भारतीय वाङ्मय में होती है। गम्भीर और कुशल सम्पादन के कारण पत्रिका गहरे तक प्रभावित करती है। इसका लम्बे समय से निर्बाध प्रकाशित होना अपने आप में काबिले तारीफ है। पत्रिका का तटस्थ होना इसके हिन्दी साहित्य का सेवाभावी होने का अनुकरणीय प्रमाण है। जो अंक हमें मिल जाते हैं उन्हें सहेज कर रख लेता हूँ ताकि मेरे बाद मेरे बच्चे अपने ज्ञान की वृद्धि कर सकें।

— **शब्बन खान 'गुल'**, बहराइच

आपके द्वारा सम्पादित 'भारतीय वाङ्मय' पत्रिका बराबर प्राप्त हो रही है। धन्यवाद!

विश्वविद्यालय प्रकाशन के संस्थापक स्वर्गीय पुरुषोत्तमदास मोदी का मेरे जैसे कतिपय दक्षिण के रचनाकारों के साथ आत्मीय सम्बन्ध रहा है। उनके स्वर्गवास से हम लोगों को अपार दुःख हुआ। आप लोग निरन्तर उनकी प्रेरणा प्राप्त कर प्रकाशन के विस्तार के साथ सुरुचिपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक साहित्य प्रकाशित करने में तत्पर हैं। इससे हिन्दी जगत अत्यन्त लाभान्वित होता जा रहा है। अतः इस प्रयास के लिए आप लोगों को मैं बधाई देता हूँ।

—**डॉ० बालशौरि रेड्डी**
अध्यक्ष,
तमिलनाडु हिन्दी अकादमी, चेन्नै

'भारतीय वाङ्मय' साहित्य और पुस्तक जगत के अन्य विषयों को भी छूने लगा है।

फरवरी-मार्च अंक में 'धार्मिक ठेकेदारी' में लेखक प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने धर्म के नाम पर होने वाले आडम्बरों पर सटीक विचार प्रस्तुत किये हैं। लेखक और प्रकाशक को धन्यवाद।

— **दयानन्द वर्मा**, नई दिल्ली

अप्रैल 10 का अंक सादर मिला, आभार। पूज्य पिताजी पुरुषोत्तमदासजी मोदी का स्नेह 'वाङ्मय' प्रारम्भ से पूर्व से ही मिला जिसे योग्य पिता की योग्य सन्तान, आप जैसे विद्वान सम्पादक भी निभा रहे हैं। यह पत्रिका, हमारे नैणसी को भी गुरुवत् मार्गदर्शन करती है। आपने भी पिताजी की शैली में ही, यह पत्र निरन्तर उच्चस्तरीय बना रखा है। आपके सम्पादकीय भी बड़े प्रेरक, सारगर्भित एवं राजनीतिक सुविचारों को भी भरपूर इङ्गित कर पाठकों में भली प्रकार तर्क-शैली द्वारा पूर्णतया स्थापित कर देते हैं। हिन्दी-भाषा, यह पत्रिका एवं आपका महान प्रकाशन-संस्थान, पूर्ण सुरक्षित रहेगा आपके सबल हाथों में।

— **अम्बु शर्मा**, कोलकाता

आगामी प्रकाशन

हिन्दू षड्दर्शन

लेखक

स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती

(प्रमथनाथ मुखोपाध्याय)

अनुवादक

एस०एन० खण्डेलवाल

प्रख्यात महाग्रन्थ 'जपसूत्रम्' के प्रणेता महान् दार्शनिक, गणितज्ञ तथा मनीषी स्वामी प्रत्यगात्मानन्द प्रणीत 'हिन्दू षड्दर्शन' का भाषानुवाद प्रस्तुत करते समय कहना है कि यह ग्रन्थ इस प्रसंग की सूक्ष्म विवेचना न होकर इसका दिशानिर्देश मात्र है, जो सूत्र रूप से ग्रथित है। साथ ही षड्दर्शन का साररूप है। जो विशाल कलेवरयुक्त गूढ़ तत्त्व समावृत षड्दर्शन का समग्र अध्ययन नहीं कर सकते, तथापि इस विषय के प्रति जिज्ञासु हैं, उनके लिए यह ग्रन्थ एक पथ प्रदीप के समान है। यह ग्रन्थ केवल वागविलास न होकर मनीषियों की गहन अनुभूति एवं चिन्तना पर आधारित होने के कारण अत्यन्त उपयोगी है। प्रत्यक्ष ज्ञानयुक्त है।

तत्वानुभूति

लेखक

पद्मविभूषण महामहोपाध्याय

डॉ० पं० गोपीनाथ कविराज

अनुवादक

एस०एन० खण्डेलवाल

प्रातःस्मरणीय महामहोपाध्याय डॉ० पं० गोपीनाथ कविराजजी की साधनोज्वल प्रज्ञा में जिस तत्वानुभूति का प्रतिफलन हुआ था, यह उसी का संकलन है। तत्त्व से यहाँ षट्त्रिंश तत्त्व किंवा पंचतत्वादि का तापर्यार्थ नहीं है। यहाँ तत्त्व का अर्थ प्राणब्रह्म, आत्मब्रह्म, परब्रह्मरूप सत्ता है, जो तत्वातीत होकर भी सर्वतत्त्वमय है। इनका तत्वातीत रूप मन-वाणी-अनुभूति, सबसे परे है। जीवदशा में इनके इस रूप की अनुभूति कर सकना भी असम्भव है, यहाँ तक की इनकी धारणा भी इस देहयन्त्र से कोई कैसे कर सकता है? तथापि महापुरुष के अन्तःचक्षु इनके तत्त्वमय स्वरूप की अनुभूति कर ही लेते हैं, यही है परमतत्त्व की अनुग्रह रूप कृपा। स्वप्रयत्न से कोई भी इस तत्वानुभूति का अधिकारी नहीं हो सकता। यह कृपा-सापेक्ष है।

यह अनुग्रहानुभूति सामान्य जन के लिए दुष्प्राप्य है। इस अनुभूति प्रभा को धारण करने योग्य जिस चित्तफलक की आवश्यकता है, वह पाकर भी मनुष्य उस पर संश्लिष्ट कल्मष का मार्जन नहीं कर सका है। ऐसी स्थिति में महापुरुष की तत्वानुभूतिपूर्ण वाङ्मयी त्रिपथगा में, ज्ञान-भक्ति-कर्म की अन्तःसलिला में निमज्जन करके जिज्ञासुवर्ग अवश्य कृतार्थ होगा और उसके इस स्नान से स्वच्छ-धौत-निष्कलमष चित्तफलक पर किंचित परिमाण में वह अनुभूति अवश्य प्रतिच्छवित हो सकेगी, यह विश्वास करता हूँ।

इस संक्षिप्त कलेवर तथापि प्रत्यक्षानुभूतिपूर्ण, गम्भीरार्थनिहित सद्ग्रन्थ को प्रकाशित करके सर्वजनसुलभ करने का विश्वविद्यालय प्रकाशन के अधिष्ठातागण ने एक स्तुत्य प्रयास किया है, जिसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं।

सामान्य पाठकों, छात्रों, अध्येताओं, शोधार्थियों, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं, स्कूल-कॉलेज, विश्वविद्यालय, सार्वजनिक पुस्तकालयों एवं सरकारी / गैर सरकारी संस्थाओं आदि के सम्पूर्ण पुस्तकीय समाधान हेतु

तीन हजार वर्ग फुट में स्थापित पुस्तकों का विशाल शोरूम

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

अनेकानेक विषयों के साथ आपकी सेवा में सदैव तत्पर

साहित्य, भाषा-विज्ञान, उपन्यास, कथा-कहानी, कविता, नाटक, आलोचना, समीक्षा, संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा, यात्रा वृत्तांत आदि। अध्यात्म, योग, तंत्र-मंत्र, ज्योतिष, मनीषी-संत-महात्मा जीवनचरित, धर्म एवं दर्शन, भारत विद्या, इतिहास, कला एवं संस्कृति, पुरातत्त्व, अभिलेख, मुद्राएँ, संग्रहालय विज्ञान, वास्तु कला, जनसंचार, पत्रकारिता, संगीत, अर्थशास्त्र, वाणिज्य, प्रबन्धशास्त्र, राजनीति, शिक्षाशास्त्र, समाज विज्ञान, स्त्री-विमर्श, मनोविज्ञान, भूगोल, भू-विज्ञान, विशुद्ध विज्ञान जैसे-फिजिक्स, केमिस्ट्री, जूलॉजी, बॉटनी, बायोलॉजी और कम्प्यूटर साइंस आदि। लगभग सभी विषयों की महत्त्वपूर्ण पुस्तकों की उपलब्धता सुनिश्चित कर सम्पूर्ण पुस्तकीय समाधान की ओर सतत प्रयासरत।

इंटरनेट की वैश्विक दुनिया में स्थापित विशाल वर्चुअल शोरूम

विशालाक्षी भवन, चौक (चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में), वाराणसी-221001 (उ०प्र०)

With Online Shopping facility

http://www.vvpbooks.com

by Credit Card also

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082 • E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com • Website : www.vvpbooks.com

Variety of Books by Variety of renowned Authors Published by Variety of renowned Publishers under one roof

पुस्तकें प्राप्त करने हेतु सुविधानुसार पधारें, लिखें, फोन/फैक्स करें, ई-मेल करें अथवा वेबसाइट का अवलोकन कर ऑनलाइन पुस्तकों का आदेश करें।

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

काले पृष्ठों पर उकरे शब्द (कविताएँ), मोहन सपरा, प्रकाशक : आस्था प्रकाशन, प्रथम तल, जगदम्बे काम्प्लेक्स, फगवाड़ा गेट, जालंधर, प्रथम संस्करण, मूल्य : 200/-रु० (सजिल्द), 50/-रु० (पेपरबैक)

× × × आज की हिन्दी कविता का एक परिचित नाम है मोहन सपरा। प्रस्तुत संग्रह में तीन खण्डों में संकलित हैं कविताएँ। इनमें से प्रत्येक खण्ड के शीर्षक ही बहुत-कुछ बयाँ करते हैं। (1) उन्नीस प्रेम कविताएँ : संवाद से पहले; (2) अठारह कविताएँ : संवाद-स्थिति; (3) एक लम्बी कविता : अन्त तक संवाद को सरसरी तौर पर पढ़ना और फिर उससे होकर गुज़रना एक अनुभूति-यात्रा है। जीवन के संघर्षों, आघातों, जटिलताओं से उपजी तल्खियाँ इन कविताओं का अंत:सत्य है। × × काली छायाओं से भरे आकाश की शंकाएँ / उसे कभी बेबस नहीं कर पातीं / वह इस मायूस सदी का / दर्शक भर बना रहना नहीं चाहता।

रचना समय सम्पादक : बृजनारायण शर्मा / हरि भटनागर, 197, सेक्टर-बी, सर्वधर्म कालोनी, कोलार रोड, भोपाल-462042, मूल्य : 100/-रु० मात्र

× × × 'रचना समय' पत्रिका द्वारा अपने विशेषांकों के क्रम में रचनात्मक लेखन से जुड़ी श्रेष्ठ रचना प्रकाशन के क्रम में युवा कवि कुमार सुरेश की काव्य पुस्तिका 'आवाज़ एक पुल है' का प्रकाशन प्रस्तुत है। इन सहज, सादी कविताओं में न रूपवाद का दबाव है न दार्शनिक उलझाव। उसकी दृष्टि साफ है × × "करके अपने आग्रहों से संलिप्त / जब किसी सच को देखता हूँ / आधा ही देखता हूँ।" इसी क्रम में वह देखता है—× × अलसुबह सूरज नयी सुबह लिये / घर लौटता है / मैं घर लौटता हूँ / बदन में शाम लिये / मेरी चेतना में अँधेरा घिर आता है / सूरज की रोशनी से सराबोर कोलाहल के बीच / जब मैं सो जाता हूँ / अक्सर रात की सुहानी नींदों का ख्वाब देखता हूँ।"

आनंदमय दिव्य जीवन की खोज, खेमचन्द्र चतुर्वेदी, प्रकाशक : साहित्यागार, धामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर, प्रथम संस्करण, मूल्य : 250/-रु० मात्र

× × × शारीरिक और मानसिक-रूप से स्वस्थ व्यक्ति ही संतुलित जीवन जीते हुए दिव्य चेतना के आनन्दमय आयाम की ओर अग्रसर हो सकता है। प्रस्तुत ग्रन्थ के विद्वान लेखक ने सांसारिक आागमन के चक्र में गतिशील मनुष्य के भौतिक जीवन संघर्ष के बीच इस मह-तत्त्व (आनन्द) की तलाश की है। दिव्य जीवन की खोज में भारतीय धर्म, दर्शन के जिन सूत्रों को सहजता से प्रस्तुत किया गया है उन्हें किसी भाष्य से जानना दुरूह-कार्य है। अत: सहज-सरल तरीके से धर्म-दर्शन, वेद-उपनिषद्, जैनागम-बौद्धागम के बीच से गुज़रते हुए लक्ष्य तक पहुँचने का प्रयत्न है 'आनंदमय दिव्य जीवन की खोज'।

माँ कह एक कहानी, शुभदा पाण्डेय, प्रकाशक : कश्ती प्रकाशन, अलीगढ़-202001, प्रथम संस्करण, मूल्य : 50/-रु० मात्र

× × × पंचतंत्र की शैली में पशु-पक्षियों के माध्यम से बच्चों को सम्बोधित संग्रह की लघुकथाएँ बाल-मानसिकता के निर्माण का फलक प्रस्तुत करती हैं। जिनमें मनोरंजन के साथ संदेश भी है, उपदेश भी। लेखिका के शब्दों में—"माँ केवल बच्चों की ही नहीं, कहानी की भी जननी होती है जो कथानक के सूते से बातों का ताना-बाना बुनती है, मौसम की शैली का लिहाफ तैयार कर भावों के फूल बेलबूटे टाँकती है और शब्द-शिल्प के किनारे से आकर्षित बनाकर बच्चे को उढ़ा देती है, जिससे वह किसी प्रकार के अतिक्रमण से बच सके।" वस्तुत: यही तो है बालकथा की सार्थकता।

पुस्तकों का पहला काम है शिक्षा जो सभी विकास का मूल है और शिक्षा-प्राप्ति ही मनुष्य के लिए पहला निवेश है जो मानवीय प्रगति का अनिवार्य घटक है।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 11 मई 2010 अंक : 5

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक
स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 60.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित
वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003
RNI No. UPHIN/2000/10104
प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

☎ : Offi.: (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax: (0542) 2413082
E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**

प्रेषक : (If undelivered please return to :)
विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)